Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

> दया दया सहु को कहें,
> ते दया धर्म छे ठीक।
> दया ओलख नें पालसी,
> त्यानें मुगत नजीक।।
>
> दया-दया की रट सब लगाते हैं। दया धर्म अच्छा है। जो दया को पहचान कर पालेगा, वही मोक्ष के निकट होगा।
>
> – आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली | ● वर्ष 26 ● अंक 18 ● 03 फरवरी - 09 फरवरी, 2025 | प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 01-02-2025 ● पेज 16 | ₹ 10 रुपये

चित्त को मैत्रीभाव से भावित करना है कल्याणकारी : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 14

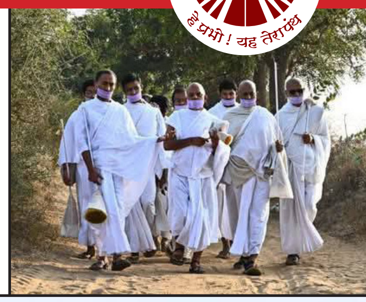

समता से होती है हर परिस्थिति अनुकूल : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

Address Here

अनुशासन से संभव है विकास : आचार्य श्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर ने गणतंत्र दिवस पर संयम, अनुशासन, शांति और मैत्री का दिया सन्देश

कुकमा।
26 जनवरी, 2025

76वें गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ कुकमा के अंगारजी गंगजी राठौड़ विद्यालय में पधारे। पूज्यवर ने अपनी अमृत देशना में भय, अनुशासन और संविधान के महत्व पर प्रकाश डाला।

भय : कारण और निवारण

पूज्यवर ने कहा कि भय किसे सताता है और किसे नहीं? इस पर विचार करें तो जैन दर्शन में मोहनीय कर्म की प्रवृत्तियों में भय भी एक प्रवृत्ति है। जब यह वेदनीय संस्कार उदय को प्राप्त होता है, तो व्यक्ति भयभीत हो जाता है। भय के कारण कई हो सकते हैं— कुछ लोग विशेष जीवों से डरते हैं, कुछ लोग बीमारी और मृत्यु से भयभीत रहते हैं। प्रमाद, गलतियाँ, चोरी, झूठ आदि भी भय का कारण बन सकते हैं। जहां नियमों का उल्लंघन होता है, वहाँ भय उत्पन्न हो सकता है। अतः यदि हम भय से मुक्त होना चाहते हैं, तो संयम और सत्य का पालन करें।

गणतंत्र दिवस और संविधान की महत्ता

आचार्यश्री ने कहा कि 15 अगस्त के बाद 26 जनवरी का भारत के लिए विशेष महत्व है। ये दिन राष्ट्र के प्रति हमारी जिम्मेदारी की भावना को जागृत करने वाले हैं। संविधान किसी भी देश के लिए अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि यह व्यवस्था को बनाए रखता है। भारत का संविधान लोकतांत्रिक ढांचे पर आधारित है, जहाँ न्यायपालिका की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। न्याय के साथ दंड संहिता भी आवश्यक होती है, क्योंकि गलत कार्यों पर दंड मिलने से अन्य लोग भी सतर्क रहते हैं। इसी प्रकार, अनुशासन प्रत्येक संस्था और संगठन में आवश्यक है, क्योंकि अनुशासन से ही विकास संभव है।

लोकतंत्र और नैतिक जिम्मेदारी

आचार्यश्री ने कहा कि लोकतंत्र जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन की व्यवस्था है। संविधान को पालन करने वाले भी होने चाहिए और उसका पालन करवाने वाले भी। न्यायपालिका का अंकुश हो तो व्यक्ति सही मार्ग पर चलता है। जहाँ राष्ट्र का प्रश्न आता है, वहाँ राष्ट्र सर्वोपरि होना चाहिए। राजनीतिक दल भी देशसेवा के लिए ही होते हैं। देश के नागरिकों को शांति, मैत्री और धर्म-अहिंसा के मार्ग पर चलना चाहिए, तभी राष्ट्र कल्याण की ओर अग्रसर हो सकता है।

(शेष पेज 2 पर)

ज्ञानपूर्वक आचरण बनाता है जीवन को सार्थक : आचार्यश्री महाश्रमण

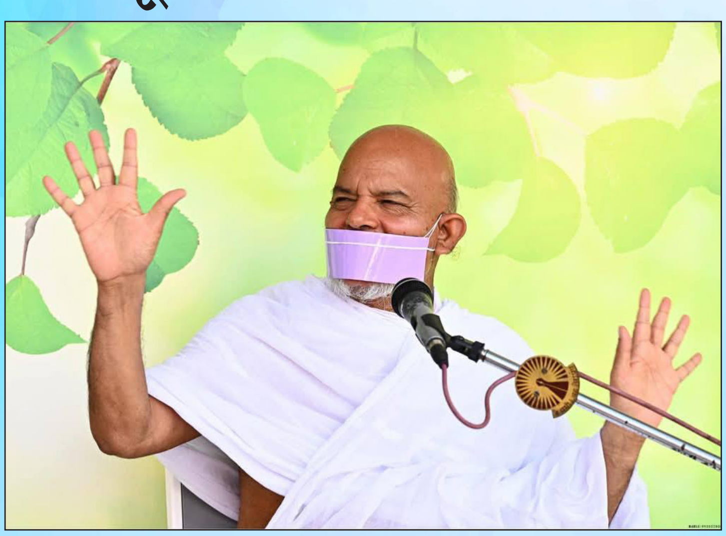

सापेडा।
25 जनवरी, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ सापेडा में स्थित एस.आर.के. इंस्टिट्यूट परिसर में पधारे। परम पूज्य आचार्यश्री ने अपने मंगल प्रवचन में ज्ञान और आचरण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ये दोनों हमारे जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। शास्त्रों में कहा गया है— पहले ज्ञान, फिर दया, अहिंसा और आचरण। ज्ञानपूर्वक आचरण करना ही जीवन को सार्थक बनाता है।

आचार्यश्री ने कहा कि अज्ञानता अंधकार, दुःख और कष्ट का कारण है। गुस्से और अन्य पापों से भी अधिक हानिकारक अज्ञान होता है, क्योंकि यह व्यक्ति की चेतना को आच्छादित कर उसे हित-अहित का बोध नहीं होने देता। ज्ञान, व्यक्ति को सम्यक् दृष्टि प्रदान करता है और जब इसके अनुरूप आचरण होता है, तो वह आत्मकल्याण की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

साधु के लिए संयम और अहिंसा की आराधना तभी प्रभावी हो सकती है, जब उसे जीव-अजीव का यथार्थ ज्ञान हो। बिना तत्वज्ञान के साधना और आराधना कितनी भी गहरी क्यों न हो, वह पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकती।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि ज्ञान के दो स्वरूप हो सकते हैं — एक वैदुष्य रूप में बौद्धिक ज्ञान और दूसरा मूल तात्त्विक आध्यात्मिक ज्ञान। मूल तात्त्विक ज्ञान ही साधना की सुदृढ़ नींव है। यदि यह नींव मजबूत होगी, तो संयम रूपी भवन दृढ़ता से टिक सकेगा।

(शेष पेज 2 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
03 फरवरी - 09 फरवरी, 2025

भावों की शुद्धता से जीवन को करें उज्ज्वल : आचार्यश्री महाश्रमण

अंजार।
24 जनवरी, 2025

भैक्षव गण सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ विहार कर अंजार पहुंचे। कच्छ में अंजार का विशेष महत्व है, जहाँ जैन समाज के अनेक परिवार निवास करते हैं। परम पावन आचार्यश्री ने पावन देशना प्रदान करते हुए कहा कि मनुष्य के भीतर भावधारा निरंतर प्रवाहित होती रहती है। कभी शुभ विचार चित्त के कैनवास पर उभरते हैं, तो कभी अशुभ भाव भी स्थान पा लेते हैं। यह मोहनीय कर्म का प्रभाव होता है, जो हमारे भीतर गहराई तक जड़ें जमाए रहता है।

आचार्यश्री ने समझाया कि मोहनीय कर्म हमारे कार्मण शरीर का ही एक अंग है। जब इसका उदय होता है, तो असद्भाव प्रकट होने लगते हैं, और जब इसका क्षय होता है, तो सद्भाव की उत्पत्ति होती है। साधना के माध्यम से भावों की शुद्धता को प्राप्त किया जा सकता है। यदि शुद्धता उत्कृष्ट रूप से विकसित हो जाए, तो सिद्धत्व की प्राप्ति भी सहज हो सकती है। इसलिए हमें अपने भावों को शुद्ध रखने का निरंतर प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने बताया कि हमारे मन की तीन स्थितियाँ होती हैं— अशुभ मन (दुर्मन), शुभ मन (सुमन) और अमन। जब मन किसी भी प्रकार के विचार, स्मरण या कल्पना से मुक्त हो जाता है, तो वह अमन की स्थिति को प्राप्त करता है। ध्यान के अभ्यास में ज्ञाता-द्रष्टा भाव विकसित कर निर्विकारता की ओर अग्रसर होना महत्वपूर्ण है। व्यग्र मन से एकाग्र मन की ओर बढ़ना और फिर मन से ऊपर उठना ध्यान की सर्वोत्तम भूमिका हो सकती है।

जैन धर्म में प्रेक्षाध्यान की परंपरा प्रचलित है, जिसमें एकाग्रता और अंतर्मुखता पर विशेष बल दिया जाता है। ज्ञानावरणीय कर्म के प्रभाव को कम किया जाए, तो आत्मज्ञान की अनुभूति संभव हो सकती है। हम अपनी इंद्रियों को बाहरी विषयों की ओर केंद्रित रखते हैं, लेकिन हमें भीतर की ओर भी दृष्टिपात करने का प्रयास करना चाहिए। आत्मा के प्रति जागरूक बने रहना आध्यात्मिक प्रगति की ओर ले जाने वाला मार्ग है।

आचार्यश्री ने आगे फ़रमाया कि साधु समाज बाहरी संयोगों और संबंधों से मुक्त होता है, वहीं गृहस्थ को परिवार में रहते हुए भी अनासक्त भाव को अपनाना चाहिए। धाय माता की भांति निर्लेप रहने का अभ्यास करना चाहिए। जैन धर्म में कहा गया है— "कौन बेटा, कौन पिता? सब कर्मों का अपना खेल है।"

गृहस्थ यदि अनुकंपा और अहिंसा की भावना से जीवन यापन करे, तो पापकर्म से बच सकता है। हमें अपने भीतर करुणा और दया का संचार करना चाहिए, क्योंकि यही हमारे कल्याण का मूल आधार बन सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जब घोर अंधकार होता है, तो हमें कुछ भी दिखाई नहीं देता, और जब अत्यधिक प्रकाश होता है, तब भी हमारी दृष्टि चकाचौंध से भ्रमित हो जाती है। इसी प्रकार, जब शरीर रोगग्रस्त होता है, तो भी यथार्थ बोध कठिन हो जाता है। इसलिए हमें अपनी दृष्टि को सदा प्रसन्न और सम्यक बनाए रखना चाहिए। जैन दर्शन का मूल आधार सम्यग्दृष्टि है। जब कोई व्यक्ति सम्यग्दृष्टि को प्राप्त कर लेता है, तो उसका ज्ञान भी सम्यक हो जाता है और वह चारित्र की दिशा में आगे बढ़ता है।

बालोतरा चतुर्मास के बाद गुरु दर्शन कर रही साध्वी मंगलयशाजी ने अपनी भावना व्यक्त की एवं सहवर्ती साध्वी वृंद के साथ गीत का संगान किया।

पूज्यवर के स्वागत में अंजार तेरापंथ समाज से चंद्रकांत भाई संघवी, जयेश भाई शाह, बनेचंद भाई गणेचा, डीसा श्रीमाली जैन संघ के जगदीशभाई संघवी, आठकोटि मोटीपक्ष जैन संघ के परेशभाई भंसाली, छहकोटि जैन संघ से मुकेशभाई शाह, मंत्री नारायण भाई डांगर, अंजार के विधायक टिकमभाई छांगा ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ समाज की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पृष्ठ 15 का शेष

अनुशासन से संभव...

मुख्य प्रवचन से पूर्व विहार के दौरान रतनाल नामक गांव में आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में झण्डोत्तोलन का कार्यक्रम समायोजित किया गया। वहां आचार्यश्री ने समुपस्थित जनता व विद्यार्थियों को पावन पाथेय भी प्रदान किया। पूज्यवर के स्वागत में कुकमा गांव पंचायत की सरपंच रसीला बेन की ओर से उत्तमभाई राठौड़ ने अपनी भावना व्यक्त की। अंगारजी गंगजी राठौड़ विद्यालय के हरगोविंद भाई चौहान एवं गाँव की ओर से देवराज भाई ने भी अपने विचार रखे। अपने संसारपक्षीय क्षेत्र भुज-कच्छ में चातुर्मास संपन्न कर गुरु दर्शन करने वाले मुनि अनंतकुमारजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ज्ञानपूर्वक आचरण बनाता..

सम्यक् ज्ञान को अंक 'एक' की संज्ञा देते हुए पूज्य प्रवर ने बताया कि 'शून्य' की कीमत तभी होती है जब उसके पहले 'एक' हो। इसी प्रकार, सम्यक् ज्ञान होने पर ही श्रावकत्व या साधुत्व की सार्थकता सिद्ध होती है। आचार्यश्री ने पाँच आश्रवों के भार की व्याख्या करते हुए कहा कि ज्यों-ज्यों आश्रव निरुद्ध होते जाते हैं, त्यों-त्यों बंधनों का भार हल्का होता जाता है। सम्यक्त्व प्राप्त होने पर जीव को केवल वैमानिक देव गति में पुरुष रूप में ही आयुष्य बंधन होता है। इस प्रकार, मिथ्यात्व से मुक्त होकर सम्यक्त्व की ओर बढ़ने का महत्व अत्यंत विशिष्ट है।

आचार्यश्री ने गृहस्थों को भी संयम और त्याग अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि गृहस्थ जीवन में रहकर भी कुछ नियमों का त्याग कर संयम की दृढ़ता बढ़ाई जा सकती है। बारह व्रतों को धारण करना चाहिए और जीव-अजीव के तत्वों को समझने का प्रयास करना चाहिए। यह जीवन धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है, इसलिए हमें सम्यक्त्व, संयम और चारित्र की आराधना कर आत्मा को मोक्ष की ओर अग्रसर करना चाहिए।

पूज्यवर के स्वागत में एस.आर.के. इंस्टीट्यूट के प्रिंसिपल निर्देशभाई ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। महिला मंडल ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त करते हुए भक्ति गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

समर्पण और त्याग से ही मिलती है परिवार में सुख और शांति

डिमापुर (नागालैंड)।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में 'कैसे हो आपसी रिश्ते' कार्यशाला एवं सम्मान समारोह डिमापुर (नागालैंड) सभा द्वारा आयोजित हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा- व्यक्ति का मनोभाव रहे कि परिवार में शांति के साथ कैसे रहूं? जीवन में थोड़ा परिवर्तन लाने से परिवार की व्यवस्था सम्यक बन जाती है। सभी एक दूसरे को बदलना चाहते हैं, इसलिए परिवार में अशांति बढ़ती जा रही है। मैं भी शांति से रहूं और दूसरों को भी शांति से रहने दूं, यह हमारा व्यवहार होना चाहिए। व्यक्ति दुनिया को बदलना चाहते है लेकिन अपने आपको बदलना नहीं चाहता। अपने चिंतन में सुधार से ही जीवन व्यवहार में सुधार संभव है। परिवार में एक दूसरे के प्रति प्रेम से रहेंगे तो एक दूसरे की कमियों को नहीं देखा जाएगा। जहां प्रेम है वहां अच्छाई को देखा जाता है। शिक्षा का सार यही है कि हम जीवन जीने की कला सीखें। व्यक्ति को स्वार्थ वादी दृष्टिकोण से ऊपर उठना चाहिए। बड़े छोटे को वात्सल्य दे और छोटे बड़ों को सम्मान दें। समर्पण और त्याग से ही परिवार में सुख सुकुन मिलता है। दृष्टिकोण नकारात्मक बनने से आपसी रिश्ते खत्म होते देर नहीं लगती है।

मुनि कुमुद कुमारजी ने कहा- आज के समय में रिश्तों की अहमियत भूलते जा रहे हैं। सुखी परिवार हमें बहुत कुछ प्रेरणा प्रदान करता है। परिवार के सदस्य एक दूसरे के प्रति सहयोग, सेवा, समन्वय, सहनशीलता, विनय-वात्सल्य, साथ में भोजन तथा सप्ताह में एक बार सामूहिक संगोष्ठी रखें तो प्रत्येक परिवार सुखी-समृद्ध बन जाएगा, स्वर्ग के सुखों का अनुभव प्राप्त होगा। परिवार या रिश्ते जबरदस्ती नहीं चलते है वे चलते है आपसी व्यवहार एवं प्रमोदभाव से। अधिकार जताना ही नहीं अधिकार देना भी सीखें। कार्यक्रम का शुभारंभ सभा के सदस्यों के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष अशोक कोचर ने दिया। गुवाहाटी से निर्मला बोथरा, ऋतु डागा, वर्षिता बोथरा, महिला मंडल डिमापुर, ज्ञानार्थीयों, दिगम्बर जैन समाज से ओमप्रकाश सेठी, महेश अग्रवाल, जोरहाट सभा अध्यक्ष रतनलाल भंसाली, डिफू महिला मंडल ने गीत, वक्तव्य, कविता तथा नाटक के माध्यम से प्रस्तुति दी। आभार सभा सहमंत्री अशोक बोथरा ने दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि कुमुद कुमारजी ने किया। सम्मान समारोह का संचालन सभा मंत्री प्रकाश बोथरा ने किया। सभा द्वारा विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों, डाक्टरों एवं बाहर से समागत समाज का सम्मान किया गया।

संक्षिप्त खबर

निःशुल्क त्वचा, मधुमेह एवं रक्तचाप शिविर का आयोजन

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद्, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम एवं मेवाड़ जैन सेवा संस्था के संयुक्त तत्वावधान में प्रिंसेस श्राइन, पैलेस ग्राउंड में आयोजित मेवाड़ उत्सव 2025 के उपलक्ष में निःशुल्क त्वचा सम्बन्धित रोग, मधुमेह एवं रक्तचाप जांच का आयोजन किया गया। त्वचा रोग विशेषज्ञ डॉ. सुनील कुमार द्वारा फंगल इन्फेक्शन, एलर्जी, बालों का झड़ना आदि अन्य रोगों के लिए चिकित्सीय सलाह प्रदान की गई। लगभग तीन घण्टे तक चले इस शिविर में कुल 87 सदस्य लाभान्वित हुए। एटीडीसी स्टाफ दीपा एवं श्यामला द्वारा ग्लूकोमीटर के माध्यम से मधुमेह एवं रक्तचाप परीक्षण भी किया गया, जिसमें लगभग 92 सदस्य लाभान्वित हुए। इस अवसर पर तेयुप राजाजीनगर से अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया, राजेश देरासरिया, संजय मांडोत, जयंतिलाल गांधी, ललित मुणोत, योगेश मेहता ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

गणतंत्र दिवस का आयोजन

सुजानगढ़। 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी एवं साध्वी मंजूयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में गणतंत्र दिवस मनाया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई तत्पश्चात साध्वी सुप्रभाजी द्वारा मंगल पाठ सुनाया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आयोजित इस समारोह में महिला मंडल की परामर्शक विजया रामपुरिया ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। सामूहिक राष्ट्रगान का संगान किया गया। इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी भूतोड़िया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष महेश तंवर, ज्ञानशाला संयोजक संजय बोथरा, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, सभा सदस्य, संपूर्ण महिला मंडल, कन्या मंडल की उपस्थिति रही।

ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन

कटक। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, कटक ने वृहद ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन, काठगड़ा साही, कटक में आयोजित किया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मलेन और कटक सेंट्रल रेड क्रॉस सोसाइटी के साथ मिलकर आयोजित शिविर में कुल 100 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। परिषद अध्यक्ष विकाश नौलखा ने आभार व्यक्त किया। रक्तदान संयोजक अरिहंत चौरडिया, पदाधिकारी गण एवं सदस्यों का अथक परिश्रम लगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष रूप से किशोर मंडल प्रभारी हर्ष चोपड़ा, संयोजक वैभव सेठिया, सह-संयोजक रचित सिंघी एवं पूरी किशोर मंडल की टीम का भी सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के पश्चात सेंट्रल रेड क्रॉस के सभी सदस्यों को परिषद की ओर से सम्मानित किया गया और आभार ज्ञापन किया गया।

हेल्थ कैंप का आयोजन

अहमदाबाद। नरेन्द्र मनोज सेठिया के निवास स्थान पर डॉ. समणी मंजुप्रज्ञाजी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञाजी के सान्निध्य में हेल्थ कैंप का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग 30 लोगों ने भाग लिया। समणीजी के कहा कि संसार में पहला सुख निरोगी काया को माना गया है। काया में वात-पित-कफ़ का संतुलन बना रहे, इस हेतु समणीजी ने अनेक उपाय बताए। समणी जी के 11 दिवसीय प्रवास में लोगों ने उत्साह से लाभ लिया एवं जागृति आई। जिज्ञासा समाधान के बाद शिविर सम्पन्न हुआ।

गुरू दीपक है, जो अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करते हैं

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी में मुनि मणिलालजी की परोक्ष सन्निधि व मुनि चैतन्यकुमारजी 'अमन' के निर्देशन में 25वीं मासिक भिक्षु भक्ति का आयोजन हुआ। जिसमें अहमदाबाद से समागत संगायिका जिज्ञासा पींचा ने गीतों की प्रस्तुति देकर आचार्य भिक्षु के चरणों में अपनी भावनाएं प्रकट की। भिक्षु भक्ति में मुनि चैतन्य कुमार जी ने कहा संसार में ब्रह्मा को जन्मदाता, विष्णु को पालनकर्ता और शिव को उद्धारकर्ता माना गया है किन्तु गुरु में ये तीनों ही गुण समाहित हो जाते हैं। क्योंकि गुरु शिष्य को धर्म के मार्ग पर लगा कर आत्मगुणों को जन्म देने वाले, संवर्द्धन करने वाले और उद्धार करने वाले होते हैं। तेरापंथ के प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु ऐसे महान गुरू थे जो लाखों-लाखों लोगों के लिए तारणहार बने हुए हैं। गुरू दीपक हैं जो अज्ञानरूपी अंधकार का नाश कर देते हैं।

इस अवसर पर संस्थान की ओर से मुख्य गायिका जिज्ञासा पींचा एवं का सम्मान किया गया। संयोजक राहुल बालर का सम्मान संस्थान की ओर से उपाध्यक्ष उतमचंद सुखलेचा ने किया। उकलाना, हरियाणा से नगरपालिका चैयरमेन विकास सौरव जैन, सुशील जैन, विकास पंचाल, मनोज जैन विशेष रूप से उपस्थित थे।

दो दिवसीय श्री उत्सव का आयोजन

गुवाहाटी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तथा तेरापंथ महिला मंडल, गुवाहाटी के तत्वावधान में दो दिवसीय 'श्री उत्सव - एक कदम स्वावलंबन की ओर' का आयोजन स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। नमस्कार महामंत्र, प्रेरणा गीत एवं लोगस्स पाठ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

अध्यक्ष अमराव बोथरा ने अपने वक्तव्य से सभी का स्वागत करते हुए सभी स्टॉल धारकों को शुभकामनाएं दी। मुख्य अतिथि बरनाली शर्मा (सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, असम सरकार)ने प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए मंडल द्वारा किए गए इस प्रयास की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

विशेष अतिथि के रूप में मारवाड़ी सम्मेलन, गुवाहाटी महिला शाखा की अध्यक्ष संतोष शर्मा, महिला मंडल की राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य सुचित्रा छाजेड़, मंडल की वरिष्ठ सदस्याएं उपस्थित थे। साथ ही तेरापंथ महासभा के ट्रस्टी प्रताप कोचर, तेरापंथ सभा अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, तेयुप अध्यक्ष सतीश भादानी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष बजरंग बैद, मारवाड़ी युवा मंच गुवाहाटी ग्रेटर अध्यक्ष हितेश चोपड़ा, कल्याण आश्रम गुवाहाटी नगर समिति अध्यक्ष बाबूलाल श्रीमाल, सुनील कठोतिया की गरिमामय उपस्थिति रही। सभी महानुभावों का मंडल द्वारा सम्मान किया। सभी ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की व इस भव्य आयोजन की भूरी-भूरी प्रशंसा की। इस प्रदर्शनी में कुल 51 स्टॉल लगे थे, जिनमें गुवाहाटी के साथ दिल्ली, कोलकाता, बंगाईगांव, धुबड़ी, फारबिसगंज, तेजपुर आदि क्षेत्र की बहनों ने भी स्टॉल लगाए थे। इस प्रदर्शनी के दोनों दिनों में अच्छी संख्या में बहनों की उपस्थित रही।

स्टॉल धारको व आगंतुकों के लिए प्रति 2 घंटे में लकी ड्रा भी रखा गया, जिसके विजेताओं को मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम की संयोजिका बबीता लुणावत, राजश्री दुगड़, मीनू दुधोड़िया, समता कुहाड़, सुनीता भुतोड़िया, सुनीता मालू, पूजा महनोत, पिंकी बैंगानी के साथ अन्य सदस्यों के अथक श्रम व प्रयास से कार्यक्रम का सफल आयोजन हुआ। मंत्री ममता दुगड़ ने तेरापंथी सभा, सभी संघीय संस्थाओं तथा सभी सदस्यों का उनके अमूल्य योगदान हेतु आभार व्यक्त किया।

दो धाराओं का हुआ आध्यात्मिक मिलन

रामनगर।

बीजीएस ब्लाइंड स्कूल, रामनगर में आचार्य श्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती मुनि मोहजीत कुमारजी ठाणा 3 एवं सुशिष्या साध्वी उदितयशाजी ठाणा 4 का आध्यात्मिक मिलन हुआ। साध्वी संगीतप्रभाजी, साध्वी भव्ययशा जी एवं साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने मुनिश्री के स्वागत में गीतिका प्रस्तुत की।

साध्वी भव्ययशा जी एवं साध्वी शिक्षा प्रभाजी ने मुनिवृंद के स्वागत में संवादात्मक प्रस्तुति दी। मुनि जयेशकुमार जी ने संस्कृत भाषा में अपनी प्रस्तुति दी। मंड्या सभा अध्यक्ष सुरेश भंसाली ने पधारे हुए सभी मेहमानों का स्वागत किया। साध्वी उदितयशाजी ने अपना वक्तव्य कन्नड़ भाषा में शुरू किया। मुनि मोहजीतकुमार जी ने साध्वीश्री की आगामी यात्रा की मंगल कामना करते हुए कहा कि मलनाड क्षेत्र बहुत ही साताकारी है, श्रद्धा का अच्छा क्षेत्र है। गुरुदेव की पुण्याई एवं कृपा से हम अपनी साधना कर रहे हैं, हमारा आध्यात्मिक विकास होता रहे।

तेरापंथ सभा गांधीनगर मंत्री विनोद छाजेड़ ने सभी का स्वागत करते हुए मुनिश्री से निवेदन किया कि बैंगलोर प्रवास में अधिक से अधिक गांधीनगर भवन में विराजने की कृपा कराएं। गुरुदेव की कृपा से साध्वीश्री का गांधीनगर का चातुर्मास सफलतम रहा है। इस अवसर पर तेरापंथ सभा गांधीनगर अध्यक्ष पारसमल भंसाली, सभा पूर्व अध्यक्ष बहादुर सेठिया, गौतम कोठारी, सुरेश दक, युवक परिषद मंत्री राकेश चोरड़िया, राजाजीनगर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, आर.आर.नगर सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़, मंड्या सभा अध्यक्ष सुरेश भंसाली एवं मंड्या, चिकमगलूर, बिडदी, विजयनगर, राजाजी नगर, हनुमंतनगर से सैकड़ों की संख्या में श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित थे। आभार मंड्या सभा के मंत्री विनोद भंसाली ने दिया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
03 फरवरी - 09 फरवरी, 2025

161वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष आलेख

तेरापंथ और मर्यादा

● मुनि मदन कुमार ●

तेरापंथ के प्रणेता आचार्य श्री भिक्षु ने कहा था कि जब तक संघ के सदस्यों में आचार निष्ठा रहेगी तब तक धर्मसंघ चलता रहेगा। उन्होंने पहला स्थान आचार को तथा दूसरा स्थान सिद्वान्त को दिया। आचार और सिद्धान्त की निष्ठा पैदा करने के लिये उन्होंने मर्यादाओं का निर्माण किया। प्रखर साहित्यकार श्रीमद् जयाचार्य ने मर्यादाओं को महोत्सव का रूप दिया। तेरापंथ एकमात्र धर्मसंघ है जहाँ प्रतिवर्ष मर्यादाओं का महोत्सव मनाया जाता है तथा मानव समाज को मर्यादा के पथ पर चलने के लिये अभिप्रेरित किया जाता है।

वर्तमान युग में यह एक आश्चर्य है कि इतना बड़ा धर्मसंघ एक आचार्य की आज्ञा में चलता है। यह अहंकार और ममकार के विसर्जन का निदर्शन है। यह संघ त्याग और बलिदान की भावना से अनुप्राणित है। आचार्यश्री भिक्षु ने अनुभव किया था कि अनुशासन के बिना कोई भी संघ पवित्र नहीं रहा सकता। अनुशासन के आधार पर ही संघ विकास करता है और शक्तिशाली बनता है। अध्यात्म को पल्लवित करने के लिये मर्यादा और व्यवस्था बहुत जरूरी है। तेरापंथ इसका जीवन्त उदाहरण है।

प्रज्ञाप्ररूष आचार्य श्री महाप्रज्ञ कहते थे कि जब तक इसके सदस्यों के मन में अहंकार और ममकार का भाव नहीं होगा तब तक यह संघ निर्बाध चलता रहेगा। मर्यादा महोत्सव इस संघ का मेरुदंड है जो मर्यादाओं का सम्मान करना और जीवन-व्यवहार में लाना सिखलाता है। महाप्रज्ञ के शब्दों में मर्यादा महोत्सव मनाने का अधिकार भी उसे ही है जिसका मर्यादा में विश्वास है तथा अहं विलय, समर्पण एवं स्वार्थ विसर्जन में आस्था है। विश्वास और आस्था उत्तरोत्तर बढती रहे, यही मर्यादा महोत्सव मनाने का प्रयोजन है।

मर्यादा महोत्सव तेरापंथ धर्मसंघ का अनुशासन और मर्यादाओं से जुड़ा एक अनूठा आयोजन है जो न सिर्फ धर्मसंघ को जीवंतता एवं स्फूर्ति देता है बल्कि समूचे समाज को अनुशासन की प्रेरणा प्रदान करता है। संविधान निर्माता आचार्य श्री भिक्षु ने पांच मौलिक मर्यादाएं तेरापंथ धर्मसंघ को प्रदान की, जो धर्मसंघ की मूलाधार बनी हुई हैं और जिनके आधार पर यह धर्मसंघ चल रहा है। वे पांच मौलिक मर्यादाएं अक्षुण्ण बनी हुई हैं -

1. **सर्व साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें।**
2. **विहार-चतुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।**
3. **अपना-अपना शिष्य-शिष्या न बनायें।**
4. **आचार्य भी योग्य व्यक्ति को दीक्षित करें। दीक्षित करने पर भी कोई अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दें।**
5. **आचार्य अपने गुरूभाई या शिष्य को अपना उत्तराधिकारी चुने, उसे सब साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें।**

आचार्य श्री भिक्षु क्रान्तद्रष्टा महापुरूष थे। शुद्ध आचार और शुद्ध विचार के लिये समर्पित उनके व्यक्तित्व ने आध्यात्मिक क्षेत्र में नयी क्रांति का सूत्रपात किया। उनका बीज मंत्र था अनुशासन। उनका अभिमत था कि जहां अनुशासन का अतिक्रमण होगा वहां मौलिकता गौण हो जायेगी एवं संघर्ष और आपाधापी को अवसर मिल जायेंगे।

भगवान महावीर ने धर्मसंघ की सफलता के लिये संविभाग व्यवस्था पर बल दिया और उसे मोक्ष प्राप्ति का आधार बताया। आचार्य श्री भिक्षु ने इसी व्यवस्था को धर्मसंघ का आधार बनाया। भिक्षा में जो भोजन मिले उसे बांटकर खाए, जो वस्त्र मिले उसे बांटकर उपयोग करे तथा ठहरने के लिये जो स्थान मिले उसे भी विभागपूर्वक ग्रहण करे। इस तरह संविभाग-व्यवस्था से धर्मसंघ समें सुव्यवस्था रहेगी और उसमें सत्य, शिव एवं सौन्दर्य के दर्शन होंगे। तेरापंथ धर्मसंघ में यह व्यवस्था आदि काल से सुचारू रूप से चल रही है। वर्तमान में लगभग 725 साधु-साध्वियां इस धर्मसंघ में साधनारत हैं तथा एक ही आचार्य के निर्देश पर चलते हैं, यह एक अद्भुत बात है।

मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली होता है और संघीय परंपरा को सुदृढ़ करता है। जहां एक ओर बसन्त पंचमी को सेवा केन्द्रों की नियुक्ति की जाती है जिससे रूग्ण और वृद्ध साधु-साध्वियां निश्चिंतता का अनुभव करते हैं वहां दूसरी ओर माघ शुक्ला सप्तमी को साधु-साध्वियों के चतुर्मासों की घोषणा की जाती है। जिसे हजारों श्रद्धालु लोग उत्कर्ण होकर सुनते हैं तथा सन्तोष का अनुभव करते हैं। कुल मिलाकर मर्यादा महोत्सव सारे समाज को नव ऊर्जा, उन्मेष एवं जीवन्तता प्रदान करता है तथा अनुशासन ओर मर्यादा की प्रेरणा से सिक्त करता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ के शब्दों में तेरापंथ के आचार्य समूचे धर्मसंघ को अनुशासन और व्यवस्था देते हैं और संपूर्ण धर्मसंघ उसका पालन करता है। उसके मध्य में श्रद्धा के अतिरिक्त दूसरी कोई शक्ति नहीं है। तेरापंथ के विनम्र व हृदय प्रेरित अनुशासन और आचार्य केंद्रित व्यवस्था सचमुच आश्चर्य की वस्तु है। मर्यादा महोत्सव उसका प्रतीक है। इस दिन आचार्य भिक्षु द्वारा प्रदत्त संविधान का वाचन, श्रद्धा समर्पण का भव्य आयोजन तथा भावी कार्यक्रम का उद्घोष किया जाता है।

तेरापंथ वीतराग-पंथ है। उसकी नींव परमपूज्य आचार्य श्री भिक्षु ने डाली। वे मर्यादा-पुरूष और मर्यादा प्रणेता बने। तेरापंथ के चुतुथ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य मर्यादा महोतसव के प्रतिष्ठापक बने। महामना आचार्य श्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने मर्यादा महोत्सव को नूतन एवं अभिराम स्वरूप् प्रदान किया। परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी उनके पदचिह्नों पर चलकर तेरापंथ के कुशल - संचालक बन रहे हैं। वर्तमान के इस स्वच्छंदतापूर्ण युग में मर्यादा का मूल्य बढ़ता जा रहा है। जहां मर्यादा और अनुशासन है, वहीं साधना है। आचार और विचार की शुद्धि के लिए धर्मसंघ का मर्यादित होना आवश्यक है। मर्यादा से ही शुद्ध आचार-विचार की परंपरा को स्थायित्व और सौष्ठव प्रदान किया जा सकता है।

ज्ञान का सार आचार है और आचार से ज्ञान सुशोभित होता है। तेरापंथ के आचार्य सर्वाधिक मर्यादित पुरूष होते हैं। वे धर्मसंघ में अनुशासन और मर्यादा के नियंता हैं। परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी ने कहा था - 'तेरापंथ की शिष्य-संपदा भाग्यशाली है, जिन्हें गुरू की शक्ति मिलती है। संघ नाव है। संघ शरण है। संघ आधार है।' संघ की शक्ति को देखने का अपूर्व अवसर है- मर्यादा महोत्सव। महाव्रत मूल गुण हैं और मर्यादाएं उत्तरगुण हैं। ये महाव्रतों की सुरक्षा के लिये हैं। तेरापंथ की महिमा यही है कि वह एक आचार्य केन्द्रित धर्म संघ है। शताब्दी मर्यादा महोत्सव, बालोतरा में आचार्य श्री तुलसी ने संगान किया था-

सूरज चांद सितारों ने कब निज मर्यादा छोड़ी।
और समंदर धरती अम्बर ने कब सीमा तोड़ी।
मर्यादा से अन्वित ज्ञान तपस्या और विनय हो।।
गण मर्यादामय हो।।

वर्तमान युग में मर्यादा की उपयोगिता

● साध्वी जगवत्सला ●

तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादित और संगठित धर्मसंघ है। इसकी अखंडता का आधार है—चतुर्विध तीर्थ का सहज, समर्पित एकत्व। यह संगठन की विरासत हमें जन्मघूंटी के साथ प्राप्त हुई है। आचार्यश्री भिक्षु और श्रीमद् जयाचार्य ने संगठन और मर्यादा की ऐसी अवधारणा प्रस्तुत की, जो मार्क्स की कल्पना से भी श्रेष्ठ है।

तेरापंथी कौन?

सामान्यतः उत्तर होगा—जो तेरापंथ की सम्यक्त्व दीक्षा स्वीकार करता है, वही तेरापंथी है। परंतु मेरा मानना है कि तेरापंथी वह है, जिसमें अहंकार और ममकार का विसर्जन हो। जो हर स्थिति में कहे—'जो कुछ है, वह प्रभु का है, मेरा कुछ नहीं।' तेरापंथी वह है, जो संघ और आचार्य द्वारा प्रस्तुत वैचारिक क्रांति को आत्मसात करता है।

मैंने विभिन्न जैन परंपराओं के व्यक्तियों से पूछा—'क्या आप भगवान को मानते हैं?' उत्तर मिला—'हाँ, मानते हैं।' अगला प्रश्न—'क्या आप भगवान की वाणी को भी स्वीकारते हैं?' उत्तर फिर 'हाँ' में मिला। तब मैंने पूछा—'फिर आप उनके पंथ को क्यों नहीं मानते?' जब वे असमंजस में पड़ गए, तब मैंने स्पष्ट किया—भगवान को मानते हैं, भगवान की वाणी को मानते हैं, तो फिर तेरापंथ से अलग कैसे हो सकते हैं? 'तेरा' का अर्थ है—भगवान! यह आपका पंथ है। आचार्य भिक्षु ने इसी भावना के साथ कहा—'हे प्रभो! यह तेरापंथ।' इस पंथ में वही चलता है, जो सर्वात्मना समर्पण करता है।

मर्यादा का महत्व

हर समाज, हर देश, हर संस्था की सफलता का मूल आधार मर्यादा है। मर्यादा ही चेतना के उर्ध्वारोहण की सीढ़ी है। तेरापंथ धर्मसंघ में सबसे प्रमुख मर्यादा है—सभी साधु-साध्वियाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें। यह हमारी मूल मर्यादा है, जिससे संघ की स्थिरता और संगठन बना रहता है। आचार्य भिक्षु ने ऐसी मर्यादाओं की संरचना कर दी, जिससे हर विपरीत परिस्थिति पर रोक लग गई। कोई विचार, कोई प्रलोभन, कोई भटकाव संघ को विचलित नहीं कर सकता।

मर्यादा महोत्सव : जीवन का उत्सव

हम प्रतिवर्ष मर्यादा महोत्सव मनाते हैं। लेकिन यह महोत्सव केवल रस्म नहीं, बल्कि मर्यादाओं को जीने का संकल्प है। महावीर और भिक्षु दोनों क्रांतिकारी थे। उन्होंने समय के रूढ़िगत शिथिलाचार पर प्रहार कर समाज को दिशा दी। तेरापंथ इसी क्रांति की निष्पत्ति है—अंधकार में प्रकाश। आचार्य भिक्षु मर्यादा के पुरोधा थे, उन्होंने अनुशासन की ऐसी नींव रखी, जिससे तेरापंथ कालजयी बन गया।

मर्यादा : आत्मसंयम और अनुशासन

तेरापंथी श्रावक-श्राविकाएँ एवं साधु-साध्वियाँ जीवन के हर पहलू में मर्यादा का पालन करते हैं। सोने, खाने, वस्त्र, पादुका, उपकरण—हर चीज़ की मर्यादा है। एक साध्वी, साधु या अकेले पुरुष से वार्तालाप न करे—यह मर्यादा अति महत्वपूर्ण है। बिना आज्ञा सेवा न करवाना, गोचरी-पानी के लिए नहीं जाना—ये मर्यादाएँ असंयम पर अंकुश लगाती हैं। यह अनुशासनहीनता के इस युग में अत्यंत अनिवार्य है।

मर्यादा : जीवन की सुरक्षा

सूर्य जब तक मर्यादा में है, सागर जब तक मर्यादा में है, तब तक सृष्टि संतुलित रहती है। यदि सूर्य अपनी सीमा लांघे, तो समस्त सृष्टि जल जाए। यदि सागर अपनी मर्यादा तोड़े, तो समूचे राष्ट्र डूब जाएँ। प्रकृति और पुरुष दोनों ही मर्यादित रहते हैं, तभी सृजन और शांति संभव होती है।

मर्यादा स्वयं एक सुरक्षा कवच है। इसमें रहने वाला व्यक्ति सुरक्षित रहता है। यदि हम मर्यादा का पालन करें, तो संकट हमसे स्वतः टल जाएगा। मर्यादा में रहते हुए ही हम कह सकते हैं—हमारा भविष्य उज्ज्वल है, हमारा पंथ गौरवशाली है, और हमारा जीवन अनुशासित एवं सुरक्षित है। मर्यादा में रहकर ही हम कह सकेंगे शुभभविष्य है सामने।

161वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष आलेख

तेरापंथ का संविधान दिवस मर्यादा महोत्सव

● मुनि दीप कुमार ●

जैन आगम नंदी सूत्र में संघ की स्तुति करते हुए संघ को आठ उपमाओं से उपमित किया है :-

संघ एक रथ है, संघ एक चक्र है, संघ एक नगर है, संघ एक पद्म है, संघ एक चन्द्रमा है, संघ सूर्य है, संघ समुद्र है, संघ मेरु है। संघ मेरु है इसकी आगमिक गाथा है -

'नाणा-वररयण-दिप्पंत-कंत-वेरुलिय-विमल चूलस्स।
वंदामि विणयपणओ, संघमहामंदरगिरिस्स।।'

जिसके प्रधान ज्ञान रूपी वैडूर्य रत्न से दीप्तिमान कांत, विमल चूला है, उस संघ महामंदराचल को विनय प्रणत होकर वंदना करता हूं। संघ गतिशील और मार्गानुगामी है इसलिए उसकी रथ से तुलना की गई है। संघ विजयी होता है इसलिए उसकी विजयक्षम चक्र के साथ तुलना की गई है। नगर प्राकारयुक्त होने के कारण सुरक्षा देता है, संघ भी साधक को सुरक्षा देता है, इसलिए संघ की नगर के साथ तुलना की गई है।

जैसे पद्म जल में रहते हुए भी उससे लिप्त नहीं होता वैसे ही संघ राग-द्वेषात्मक लोक में रहते हुए भी उससे लिप्त नहीं होता। इस आधार पर संघ की पद्म के साथ तुलना की गई है। सौम्यता और निर्मलता की दृष्टि से संघ की चन्द्रमा के साथ तुलना की गई है। प्रकाशकता और तेजस्विता की दृष्टि से संघ की सूर्य के साथ तुलना की गई है। अक्षुब्धता, विशालता और मर्यादा की दृष्टि से संघ की समुद्र के साथ तुलना की गई है। स्थिरता और अप्रकम्पता की दृष्टि से संघ की मेरु पर्वत के साथ तुलना की गई है।

संघ का कितना महत्वपूर्ण स्थान है वह हम उपर्युक्त नंदी सूत्र की स्तुति गाथाओं के माध्यम से समझ सकते हैं। संघ के चार अंग है- साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका। तीर्थंकर संघबद्ध साधना का प्रवर्तन करते हैं। संघ साधना का आश्रय स्थल है, गति है, शरण है, त्राण है, प्रतिष्ठा है, आश्वास है, विश्वास है और वातानुकुलित भवन है। वर्तमान युग में तो संघबद्ध साधना की अत्यधिक उपयोगिता है। क्योंकि संघ में शक्ति होती है। इसीलिये कहा गया है- 'संघे शक्तिः कलौ युगे।' कलियुग में संगठन ही शक्ति है। वैदिक धर्म के अनुसार अभी कलियुग है। जैन धर्म के अनुसार पांचवां आरा है। इस काल में तेरापंथ जैसा धर्मसंघ प्राप्त होना कलियुग में सतयुग की अनुभूति कराता है। तेरापंथ का भव्य प्रासाद मर्यादा और अनुशासन की भित्ति पर आधारित है। जहां अनुशासन और मर्यादा होती है वह संघ, समाज और राष्ट्र उन्नति करता है। अन्यथा अनुशासनहीनता और अराजकता पनपने की प्रबल संभावना रहती है।

संविधान का निर्माण

लोक महर्षि आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने लिखा है- 'वर्तमान युग में अनुशासन और मर्यादा के बिना साधुत्व का पालन कठिन है। जहां अनुशासन रूपी वल्गा और मर्यादा रुपी लक्ष्मण रेखाएं होती है वह संघ शिखरों का आरोहण करता है।' आचार्य श्री भिक्षु ने बहुत दूरदर्शिता से मर्यादाओं (संविधान) का निर्माण किया। उन्होंने आठ मर्यादा पत्र लिखे, जिन्हें लिखत भी कहते हैं। प्रथम मर्यादा पत्र विक्रम सम्वत 1832 मार्गशीर्ष कृष्ण सप्तमी को अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति के साथ लिखा। उसकी मुख्य शब्दावली है- 'साध-साध्वी करणा ते भारमलजी रे नामे करणा, आपरे नामे चेला चेली करणारा सर्व साधु-साध्वयां रे पचक्खाण छै।' आठवां और अंतिम मर्यादा पत्र (संविधान पत्र) सं. 1859 माघ शुक्ल सप्तमी को 'थावर कीजै थापना' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए शनिवार को लिखा।

मर्यादा का उद्देश्य

आचार्य श्री भिक्षु ने न्याय, संविभाग और शुद्ध चारित्रिक साधना के लिए मर्यादाओं का निर्माण किया। आचार्य भिक्षु ने कहा- 'सबके साथ न्याय हो इसलिए मैंने मर्यादाओं का निर्माण किया। संघ में इतने साधु-साध्वियां हैं सबको न्याय मिलता है, किसी के साथ पक्षपात नहीं होता। सबको साधना एवं प्रगति का समान अधिकार है। एक मुनि वर्षों से दीक्षित है, वह मौन या ध्यान की विशिष्ट साधना कर रहे हैं तो वैसे ही आज का दीक्षित मुनि भी उसी तरह की साधना कर सकता है। आचार्य श्री निष्पक्षता से सबकी संभाल करते हैं। भगवन महावीर ने कहा- 'असंविभागी न हु तस्स मोक्खो' - संविभाग के बिना मुक्ति नहीं है। आचार्य भिक्षु ने भगवान की इस वाणी को आधार रखते हुए कहा- संविभाग भी मर्यादा निर्माण का हेतु है। तेरापंथ में हर कार्य संविभाग से होता है। स्थान, आहार, वस्त्र आदि का सभी साधु-साध्वियों में सम वितरण होता है। कोई यह नहीं कह सकता की मुझे अमुक वस्तु कम मिली। आचार्य श्री तुलसी ने लिखा है- तेरापंथ की मर्यादाएं केवल संगठन प्रधान ही नहीं, आचार प्रधान भी हैं। आचार्य भिक्षु की दृष्टि में आचार के पीछे संगठन होता है। इसलिए उन्होंने मर्यादा निर्माण के उद्देश्य में लिखा- 'चारित्र चोखो पलावण रो उपाय कीधो है।' आचार जितना शुद्ध होगा संघ की नींव उतनी ही मजबूत होगी। आचार्य भिक्षु के अभिनिष्क्रमण के पीछे लक्ष्य था- आचार क्रांति।

मर्यादाओं का फलित

तेरापंथ की ये मर्यादाएं अप्रितम हैं। इसका अनुसरण करते हुए तेरापंथ 264 वर्षों से प्रगति कर रहा है। मर्यादाओं की बदौलत ही अडोल खड़ा है। संघ के समक्ष कितने तूफान आए लेकिन कोई आंच नहीं आई। तेरापंथ की प्रगति का एकमात्र कारण है - प्राणवान मर्यादाएं और जीवंत अनुशासन। मर्यादाओं के फलस्वरूप ही सम्पूर्ण कार्य आचार्य की आज्ञा से होता है। संघ का प्रत्येक सदस्य उनकी आज्ञा के पालन के लिए एक सच्चे सैनिक की भांति सदैव तत्पर रहता है। वह आचार्य श्री की आज्ञा को वासुदेव की आज्ञा मानता है। चाहे आज्ञा की अनुपालना के लिए भीषण कष्ट झेलने पड़े पर वह यही सोचता है- 'आणाए मामगं धम्मं' आज्ञा में मेरा धर्म है।

संघ संगठित और सुव्यवस्थित है। वह इसलिए है की आचार्य के अलावा किसी के शिष्य-शिष्याएं नहीं है। अन्यथा शिष्यों के मोह में सभी पड़ जाते हैं जिससे अव्यवस्था फैलती है। मर्यादाओं का सबसे महत्वपूर्ण फलित यह हुआ कि एक आचार्य के नेतृत्व में सम्पूर्ण संघ साधना में संलग्न है। कोई पद का उम्मीदवार नहीं है। हमारे आचार्यों का शिक्षा सूत्र रहा है- पद के उम्मीदवार नहीं, योग्य बनो। इसलिए तेरापंथ में शिक्षा, साहित्य की सर्वतोमुखी उन्नति हुई है। मर्यादाएं बंधन नहीं अपितु उन्नति और विकास का सोपान है। ये व्यवस्था है, स्वेच्छा से स्वीकृत है, बलात् थोपी हुई नही है। मर्यादाएं प्रहरी के समान है, हमारा जीवन है, निधि है, सर्वस्व है, जीवन का नवनीत है। आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में 'तेरापंथ का पर्याय मर्यादा है और मर्यादा का पर्याय तेरापंथ है।'

मर्यादा महोत्सव

आचार्य श्री भिक्षु ने अंतिम मर्यादा पत्र सं. 1859 में माघ शुक्ल सप्तमी को लिखा था। श्रीमद् जयाचार्य ने मर्यादा पत्र के आधार पर ही माघ शुक्ल सप्तमी का दिन मर्यादा महोत्सव के लिए चुना। इस अवसर पर प्रायः सभी साधु-साध्वियां, समण-समणियां एकत्रित होते हैं। आचार्य श्री सबकी सारणा-वारणा करते हैं। पूरे वर्ष भर का वार्षिक विवरण देखते हैं। जिन्होंने प्रमाद किया होता है उन्हें वे वारणा करते हुए प्रायश्चित देकर शुद्ध करते हैं, और विशेष साधना, शुद्ध आचार-मर्यादा का पालन करने वालों को ओर विशिष्ट कार्य करने वालों की सारणा करते हुए उन्हें बहुमान देकर प्रोत्साहित किया जाता है। मर्यादा महोत्सव का मूल दिन सप्तमी का होता है। यह दिन तेरापंथ का संविधान दिन होता है। आचार्यश्री के निर्देश पर बड़ी हाजरी होती है। हाजरी के पश्चात आचार्यश्री चातुर्मासों की घोषणा कराते हैं। जिसकी प्रचलित भाषा में 'लॉटरी' खुलने से तुलना की जाती हैं। सभी श्रद्धाभाव से आदेश को शिरोधार्य करते हैं।

मर्यादा महोत्सव की सपन्नता के पश्चात सभी आचार्यश्री से अभिनव प्रेरणा एवं स्फुरणा प्राप्त कर आगामी कार्य क्षेत्र के लिए अपने गंतव्य को और प्रस्थान करते हैं। आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में 161 वां मर्यादा महोत्सव आयोजित हो रहा है। इससे प्रेरणा लेकर हमारी हर सांस के साथ यह स्वर प्रतिध्वनित होता रहे :-

आणं शरणं गच्छामि। मेरं शरणं गच्छामि।
धम्मं शरणं गच्छामि। आयरियं शरणं गच्छामि।

मर्यादा लक्ष्मण रेखा की आओ शान बढ़ातें हैं

● साध्वी रतिप्रभा ●

आओ हम सब भिक्षु के विधान को शीश झुकाते हैं।
मर्यादा लक्ष्मण रेखा की आओ शान बढ़ातें हैं।।
(वंदे शासन-3)

1. बलिदानों की सुनो कहानी रोमांचित बन जाओगे,
गण बलिवेदी की धूलि को, अपने शीश चढ़ाओगे।
शासन की सुषमा बढ़ाते जो विरले कहलाते हैं।।

2. तपो भूमि भैक्षव शासन में मर्यादा ही त्राण है,
मर्यादा में चलने वाले पाते लक्ष्य महान है।
ज्ञान शरण तप की बगिया में जीवन को महकाते हैं।।

3. मर्यादा में पलने वाला फूल हमेशा खिलता है,
मर्यादा में रहने वाला दीप हमेशा जलता है।
मर्यादा की मीनारों पर शुभ भविष्य सरसाते हैं।।

4. मर्यादा पुरुषोत्तम भिक्षु को शत-शत प्रणाम है,
उन लकीरों पर चलने वाले, फकीरों को सलाम है।
गण मोर्चे पर हंसते-2 जो प्राण लुटाते हैं।।

5. महाश्रमण का शासन पाया भाग्योदय हमारा है,
गुजरात की धरा पर चमक रहा अध्यात्म सितारा है।
महावीर वाणी का अमृत जग में बरसाते हैं।।

तर्ज़ - आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं

मर्यादा रो पर्व महान

● साध्वी आस्थाप्रभा ●
● साध्वी दीक्षाप्रभा ●

मर्यादा रो पर्व महान, जय गणिवर रो गूंजे अवदान।
तेरापंथ री, के पहचान, एक गुरु अरु एक विधान।।

अम्बर अवनि अम्बुधि देखो, मर्यादा में गमता पेखो।
अनुशासन रो सम्मान।।

मर्यादा में प्राण प्रतिष्ठा, गण गणपति प्रति गहरी निष्ठा।
चाहे आंधी या तूफ़ान।।

बलिदानी संतां-सतियां री, श्रम बूंदां स्यूं सिंचित क्यारी।
बलिदानी भायां-बायां री, श्रम बूंदां स्यूं सिंचित क्यारी।
गणहित जीवन कुर्बान।।

महाश्रमण री महिमा भारी,
खिल रही भैक्षव गण फुलवारी।
ऐतिहासिक कीर्तिमान।।

च्यार तीरथ रो रंग लग्यो है,
शासन में नव चंग बज्यो है।
संघ सेवा रो आह्वान।।

तर्ज - चाहे बिक जा हरिया रुमाल

161वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष आलेख

मर्यादा महोत्सव : वासंती पुष्पपुंज

● 'शासनगौरव' साध्वी कनकश्री, लाडनूं ●

तेरापंथ जैन-समाज का एक छोटा सा किंतु शक्ति संपन्न आध्यात्मिक-धार्मिक संगठन है। इसके आदि पुरुष थे आचार्य श्री भिक्षु, जो अपने समय में मारवाड़ के संत भीखणजी के नाम से प्रख्यात हुए। भिक्षु भगवान महावीर की परंपरा के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर थे। उनका चिंतन वीतराग वाणी और विशुद्ध आचार पर केन्द्रित था। उनका सपना था सम्यक् आचार, विचार और विशुद्ध व्यवहार पर स्थित एक पारदर्शी, मजबूत और संगठित धर्मसंघ का निर्माण। इसके लिए उन्होंने त्याग और संयम के पवित्र जल से संघ की जड़ों को सींचा। 'मर पूरा देस्यां, चारित्र चोखो पालस्यां' इस इस्पाती संकल्प की ईंट उन्होंने संघ-इमारत की नींव में स्थापित की। लगता है आचार्य भिक्षु द्वारा तेरापंथ की प्राण-प्रतिष्ठा जिनशासन की सुनहरी नियति के पुनर्निर्माण के लिए ही हुई थी। उस समय किसने कल्पना की थी कि भिक्षु और उनके साथ क्रांति पथ पर अग्रसर तेरह संतों का यह काफिला परंपरित शक्तिशाली विशाल धर्मसंघों के सामने चुनौती बन कर बड़ा हो जाएगा। उस समय किसे पता था संत भीखण जी का यह छोटा सा समुदाय कितने मील के पत्थरों को पार करेगा।

आज तेरापंथ एक तेजस्वी प्राणवान और प्रगतिशील धार्मिक संगठन के रूप में प्रतिष्ठित है। क्योंकि आचार्य श्री भिक्षु ने तथा उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा ने संघ के प्रत्येक सदस्य को आत्मानुशासन, आत्म नियंत्रण और आत्म संयम का बोधपाठ दिया तथा प्रशिक्षित किया। तेरापंथ की शक्ति का स्रोत है - श्रुत की आराधना, संयम की साधना, तपस्या एवं श्रमशीलता की चतुष्पदी। इसके साथ अनुशासन, मर्यादा, अहंकार व ममकार का विसर्जन, श्रद्धा, सेवा, विनय और समर्पण - ये तत्व संघ की प्रगतिशीलता में विशेष योगभूत बने हैं। आचार्यश्री भिक्षु की दृष्टि में विस्तार का नहीं, परिष्कार का मूल्य था। उन्होंने आकार का नहीं, आचार का महत्व बताया। जड़ता का नहीं, चेतना का महत्व बताया। पूजा-पतिष्ठा का नहीं, साधना और निष्ठा का महत्व बताया था।

अनुशासन और व्यवस्था

अच्छा संगठन वह होता है, जहां सुशासन और सुव्यवस्थाएं होती हैं। राजनीति शास्त्र और समाज शास्त्र के अनुसार सुशासन के छः बिंदु हैं-

1. एकाउंटेबिलिटी - उत्तरदायित्व
2. ट्रांसपेरेंसी - पारदर्शिता
3. रूल ऑफ ला - कानून का शासन
4. रेस्पांसिवनेस - अनुकूल प्रतिक्रियात्मकता
5. इक्विटेबल गवर्नेंस - निष्पक्ष शासन
6. इंप्रूविंग गवर्नेंस - शासन में सुधार का अवकाश

वर्तमान के लोकप्रिय शब्द हैं-

एफिशिएंसी एण्ड इफेक्टिवनेस। व्यवस्था का नेतृत्व पक्ष के लिए जरूरी है कि प्रबंधन में सब की सहभागिता, प्रभावोत्पादकता तथा कौशल हो। यह शासन की एक विधा है, जिससे उसका आकलन होता है। अच्छा प्रशासक यह होता है, जो निरीक्षण करता रहता है कि वास्तव में संगठन के सदस्य और आमजन क्या चाहते हैं?

तेरापंथ की प्राण ऊर्जा

आचार्यश्री भिक्षु महान प्रशासक थे और विलक्षण संविधान निर्माता थे। उन्होंने समसायिक धर्मसंघों की दुरावस्था और दुर्बलताओं का गंभीर अध्ययन किया। अपने नवोदित धर्मसंघ को उन विकृतियों से बचाने का निश्चय किया। वर्षों की साधना और तपस्या के पश्चात् उन्होंने संघ फलक पर अपने अनुभवों की स्याही से कुछ धाराएं लिखी। वे ही धाराएं तेरापंथ के भाल पर अंकित भाग्य लिपि की अमिट रेखाएं बन गई। भिक्षु स्वामी द्वारा लिखित मर्यादाएं मात्र कानून का शासन नहीं है, अपितु संघ के प्रत्येक सदस्य को न्याय, संविभाग और समत्वपूर्ण व्यवहार मिले, संघ के सदस्यों में आपसी प्रेम रहे, कलह-कदाग्रह न हो तथा संघ में सुव्यवस्था बनी रहे, इस प्रशस्त चिंतन से आचार्य श्री भिक्षु ने मर्यादाएं लिखीं। उन मर्यादाओं को उन्होंने अपने अनुयायियों पर थोपा नहीं, प्रत्युत सबकी सहमति पूर्वक लागू किया। वे मर्यादाएं ही संघ की प्राणशक्ति है।

मर्यादा महोत्सव श्रद्धा, सेवा, साधना और समर्पण का अनोखा उत्सव है। अनुशासन, विजय और वात्सल्य का अलौकिक दृश्य है। यह तेरापंथ का पवित्र कुंभ का मेला है। इस समय संघ के सैकड़ों साधु-साध्वियों और हजारों श्रावक-श्राविकों का समागम होता है। अतीत के पर्यवेक्षण के क्रम में संघीय गति-प्रगति का लेखा-जोखा प्रस्तुत होता है, भविष्य की कार्ययोजना तैयार होती है। आचार्य सब को आध्यात्मिक प्रेरणा-पाथेय प्रदान करते हैं। साधु-साध्वियां संघीय संविधान के प्रति श्रद्धा, सम्मान और अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं। संघ, संघपति, मर्यादा और संघीय अनुशासन के प्रति वे अपनी गहरी निष्ठा अभिव्यक्त करते हैं।

161वां मर्यादा महोत्सव

धर्मसंघ का 161वां मर्यादा महोत्सव संघ के एकादशम अधिशास्ता महातपस्वी आचार्यप्रवर श्री महाश्रमण की पावन सन्निधि में गुजरात की धरती पर भुज में मनाया जा रहा है। महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ सदा की भांति माघ शुक्ला पंचमी तिथि-वसंत पंचमी से होता है। इसी दिन से वसंत ऋतु का प्रारंभ माना जाता है। वसंत का उत्सव अर्थात प्रकृति का उत्सव। वसंत ऋतु में वह अपनी सोलह कलाओं के साथ खिल उठती है। ऋतुराज वसंत अस्वस्थ जिंदगी को स्वस्थ व रमणीय बना देता है। तेरापंथ धर्मसंघ के शास्ता संगठन के योगक्षेम के संवाहक होते हैं। इसलिए वे वसंत पंचमी के दिन अस्वस्थ, अक्षम साधु-साधियों की सेवा हेतु स्थापित सेवा केन्द्रों में सेवादायी साधु-साध्वियों के वर्गों समूहों की नियुक्ति करते हैं। सेवा में नियुक्त साधु-साध्वियां एक वर्ष तक अहोभाव पूर्वक रुग्ण, अक्षम साधु-साध्वियों की सेवा का दायित्व वहन करते हैं। इस प्रकार तेरापंथ के साधु-साध्वियां भविष्य के प्रति आश्वस्त, विश्वस्त, निश्चिंत और समाधिस्थ रहते हैं।

भिक्षु की पवित्र कलम से उतरा मर्यादा-पत्र आध्यात्मिक, संघीय और सामुदायिक जीवन के दर्शन का संक्षिप्त निरूपण है। यह धर्म-संघ की फुलवारी की क्यारियों को संवारने का श्रेष्ठ उपक्रम है। मर्यादा-पत्र की प्रत्येक धारा मानो एक महकता गुलदस्ता है। एक वासंती पुष्पपुंज है। आचार्य श्री भिक्षु का एक-एक आदेश उतना ही ताजगी भरा और मानव-मन को प्रफुल्लित करने वाला है, जितना कि वासंतीपुष्प। तेरापंथ के संविधान की प्रत्येक पंक्ति का अलग रंग, अलग सुगंध और अलग ही अंदाज है। तेरापंथ का संविधान यानी सामुदायिक जीवन व्यवहार की, शांतिपूर्ण सहअस्तित्त्व की नित्य नियमावली। भिक्षु की शिक्षाओं और आदेशों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि वे अपने समय से अनेक गुणा आगे चलते थे। उनके द्वारा निर्मित मर्यादाओं का शाश्वत मूल्य है। सात सदस्यों की उपस्थिति में लिखी गई मर्यादाएं 700 साधु-साध्वियों के लिए भी उतनी ही उपयोगी और सम्मानार्ह है। ये मर्यादाएं अनुशासन की संहिताएं हैं जो कि अन्य संघों और समुदायों के लिए भी मननीय हो सकती है।

अनुशासन है शक्ति का स्रोत

'शिष्य ने पूछा- गुरुदेव ! हम साधु बने हैं तो बंधन मुक्ति के लिए बने हैं, फिर मर्यादा और अनुशासन का बंधन क्यों? प्रश्न स्वाभाविक है। क्योंकि समाज व संगठन नियमों से चलते हैं, अध्यात्म नियमों से ऊपर की अवस्था है। जैनधर्म के तीर्थंकर अर्हत् कल्पातीत होते हैं। वे नियमों, व्यवस्थाओं से मुक्त होते हैं। फिर भी प्रत्येक समाज संगठन आदि की अपनी व्यवस्था होती है। नियम, उपनियम होते हैं। उससे जुड़े रहने वाले के लिए उनका पालन करना भी अनिवार्य है। संगठन की स्वस्थता, प्रगति और विकास के लिए नियम, अनुशासन आवश्यक है। नियम भी नियंत्रण शक्ति को जगाने में सहायक बनते हैं। साधना का उद्देश्य है आत्मानुशासन जगाना। तेरापंथ धर्म संघ ने अपने 264 वर्ष के सफर में जो तरक्की की है, जो उपलब्धियां हासिल की हैं, यह एक गुरु और एक विधान का ही चमत्कार है। मर्यादा और अनुशासन का ही परिणाम है। संघ के साधु-साध्वियां स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं कि उनको संघ से सब कुछ मिला है और मिल रहा है। मर्यादा और अनुशासन उनकी गति प्रगति के अवरोधक नहीं अपितु दुर्घटनाओं से बचाने वाले हैं, सुरक्षा प्रदान करने वाले हैं और गति को संतुलित करने वाले हैं। अनुशासन में रहने वाला ही एक दिन अपनी स्वतंत्र चेतना को जगा सकता है। इसके विपरीत अनुशासनहीन व्यक्ति अपने चारों और बंधनों ओर दुःखों का ही सृजन करते हैं। आचार्यश्री भिक्षु से पूछा गया- आपका संघ कब तक बलेगा? भिक्षु का उत्तर था- ''जब तक इसके अनुयायी श्रद्धा व आधार में सुदृढ़ रहेंगे, वस्त्र-पात्र आदि की मर्यादा का लोप नहीं करेंगे, अपने लिये स्थान बनवाने के प्रपंच में नहीं पड़ेंगे, तब तक यह मार्ग अच्छी तरह से चलता रहेगा।'' इस परिप्रेक्ष्य में वर्तमान पीढ़ी की सजगता बहुत मूल्यवान सिद्ध हो सकती है। हम अपनी आध्यात्मिक, शैक्षिक क्षमताओं को जगाएं। अपनी योग्यता और उपयोगिता को सिद्ध करें और संघ का भविष्य निर्धारित करें। 'आज', समग्र प्रगति की दिशा में उठाया गया एक विशाल कदम, 'कल' संघीय प्रतिष्ठा की दिशा में एक सुनहरी छलांग साबित होगा।

अनुशासन से व्यक्ति बनता है महान

गंगाशहर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने शांतिनिकेतन सेवा केंद्र में विशेष प्रवचन के दौरान श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में अनुशासन का बहुत बड़ा महत्व है। अनुशासन से व्यक्ति महान बनता है। एक समय था जब प्रत्येक क्षेत्र में भारत विश्व गुरु था। इसका मुख्य कारण भारतीय नागरिकों में अनुशासनमय जीवन शैली का होना था। आज सर्वग्राही अनुशासनहीनता से देश में अशांति, अराजकता, हिंसा, त्याग भावना की कमी, आत्म संयम की कमी, चरित्र बल, नैतिकता व मानवीय मूल्यों की दिन प्रतिदिन गिरावट आ रही है। निज पर शासन फिर अनुशासन के मंत्र से हम फिर से संसार में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सकते हैं।

मुनि श्रेयांश कुमार जी के 9 की तपस्या के अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि इस भयंकर सर्दी में तपस्या करना उच्च मनोबल का कार्य है। तपस्या कर्म निर्जरा का मुख्य हेतु है। आत्म शोधन प्रक्रिया में तप के द्वारा परिमार्जन होता है। संचित कर्म परमाणुओं का शोधन तप के द्वारा होता है। तप मुक्ति का पथ है। मुनिश्री ने तप की अनुमोदना करते हुए जनता से अधिक से अधिक त्याग तपस्या करने का आह्वान किया।

मुनि कमलकुमार जी के प्रेरणा से प्रतिदिन चार घरों में उपवास व प्रत्येक रविवार को नवकार मंत्र के जाप का क्रम शुरू किया गया है।

उन्होंने अपने जीवन के अनुभव सुनाते हुए कहा कि जैन धर्म का आधार इन्द्रियों पर संयम करना है। सामायिक का अभ्यास मानसिक और शारीरिक शुद्धि के लिए किया जाता है। इसमें इन्द्रियों को नियंत्रित करके आत्मा के स्वरूप का चिंतन किया जाता है।

जैन धर्म में तपस्या और त्याग, इन्द्रियों पर संयम का माध्यम है। अनशन (उपवास), एकासन और व्रत के माध्यम से इन्द्रियों की इच्छाओं को दबाया जाता है। संलेखना जैन धर्म में इन्द्रियों और इच्छाओं पर संयम की चरम अवस्था मानी जाती है।

श्रीउत्सव का आयोजन

इचलकरंजी।

अभातेममं द्वारा निर्देशित, तेरापंथ महिला मंडल इचलकरंजी द्वारा आयोजित श्रीउत्सव का उद्घाटन समारोह तेरापंथ भवन में उद्घाटनकर्ता रमेश बालर एवं गणमान्य व्यक्तियों ने नमस्कार महामंत्र उच्चारण के साथ किया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष शिल्पा बाफना ने पधारे हुए सभी अतिथियों का स्वागत कर उन्हें मंडल की समस्त गतिविधियों की जानकारी दी। श्री उत्सव में विभिन्न प्रकार की कुल 38 स्टॉल्स लगायी गयी। मंत्री मीना भंसाली ने अपने वक्तव्य में कहा कि महिला हर कार्य करने में सक्षम है अब वह आत्म निर्भर बनने की दिशा में अग्रसर है। श्रीउत्सव का आयोजन भी सफलता की ओर एक कदम है।

श्री उत्सव की संयोजिका नीता छाजेड़ एवं सह संयोजिका सपना बालड़ का सराहनीय श्रम नियोजित हुआ। कार्यक्रम का संचालन मंत्री मीना भंसाली एवं आभार ज्ञापन सपना बालड़ ने किया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष अशोक बाफना, केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्या जयश्री जोगड़, तेयुप अध्यक्ष अनिल छाजेड़, प्रायोजक एम. आर. जैन एवं सह प्रायोजक महाप्राण फेब्रिक्स आदि उपस्थित थे।

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला

वापी।

अभातेयुप के तत्वावधान में साध्वी राकेशकुमारी जी आदि ठाणा-४ के सान्निध्य में भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने महामना आचार्य श्री भिक्षु के जीवन दर्शन, सिद्धांत एवं चारित्र पर श्रावक समाज को उद्बोधन दिया। उनके शंकाओं का समाधान भी दिया।

साध्वी राकेश कुमारी जी एवं सहवर्ती साध्वी वृंद ने मर्यादावली का एवं उपस्थित श्रावक समाज ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। इस कार्यक्रम में अभातेयुप मीडिया सलाहकार संजय भंडारी की गरिमामय उपस्थिति रही एवं स्वागत वक्तव्य के साथ-साथ उन्होंने महामना आचार्य भिक्षु के जीवन दर्शन पर संक्षिप्त विवरण दिया। अभातेयुप सदस्य एवं तेयुप वापी अध्यक्ष मुकेश वागरेचा ने साध्वीश्री एवं श्रावक समाज का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में वापी तेरापंथी सभा अध्यक्ष झंवर गुलगुलिया एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्षा वीणा बोथरा के साथ श्रावक समाज की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन

साउथ कोलकाता। अभातेयुप के तत्वावधान में एवं मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में कोलकाता एवं हावड़ा की सभी तेरापंथ युवक परिषदों ने मिलकर वेदिक विलेज, कोलकाता में नव वर्ष के प्रथम रविवार को अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि जिनेश कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। मुनिश्री ने अभिनव सामायिक पर प्रकाश डालते हुए सभी को प्रेरणा दी कि प्रतिदिन एक सामायिक करने का लक्ष्य रखें। विभिन्न परिषदों के लगभग 100 सदस्य एवं कोलकाता तथा हावड़ा से श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

गाँधीनगर, दिल्ली। तेयुप गाँधीनगर, दिल्ली द्वारा सतीश जैन के कृष्णानगर स्थित निवास स्थान पर समणी जिनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अभातेयुप द्वारा निर्देशित अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। समणी जिनप्रज्ञा जी ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात तेयुप अध्यक्ष अशोक सिंघी ने अभिनव सामायिक में उपस्थित श्रावक-श्राविका समाज का स्वागत व अभिनंदन किया।

समणी जिनप्रज्ञा जी ने कहा कि सामायिक में सामायिक पाठ का स्वाध्याय करना ही सामायिक है। समणी जी ने 'सामायिक क्यों, कब व कैसे?' विषय पर प्रासंगिक वक्तव्य देते हुए अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। सामायिक साधक प्रभारी हितेश दुगड़ ने आभार ज्ञापित किया। अभिनव सामायिक में कृष्णानगर, गांधीनगर क्षेत्र के श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **जयपुर।** तारामणि-मंगलचंद दुगड़ की सुपौत्री, दिव्या-पुष्पक दुगड़ की सुपुत्री का नामकरण संस्कार 'ह्री' संस्कारक राजेन्द्र बांठिया व संस्कारक पवन जैन ने जैन संस्कार विधि से सम्पन्न करवाया।

■ **बेंगलुरु।** राजलदेसर निवासी, बेंगलुरु प्रवासी अनु-अशोक कुमार बैद की पौत्री एवं प्रज्ञा-मुदित बैद की पुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक आदित्य मांडोत ने निर्दिष्ट मंत्रों का उच्चारण करते हुए संपादित करवाया। नव शिशु का नाम रीत रखा गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **बेंगलुरु।** चित्रदुर्ग प्रवासी कमलेश नितेश बाफना के बाफना मेंस वेयर (बेंगलुरु) प्रतिष्ठान का शुभारम्भ संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक आदित्य मांडोत ने निर्दिष्ट मंत्रों का उच्चारण करते हुए संपादित करवाया।

अणुव्रत कैलेंडर 2025 का विमोचन

लाडनूं।

अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्वावधान में आज ऋषभ द्वार में सेवा केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रमिलाकुमारी जी के सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमंद द्वारा प्रकाशित 'बच्चों का देश' मासिक पत्रिका एवं 'अणुव्रत कैलेंडर' 2025 का भव्य विमोचन कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति की बहनों द्वारा अणुव्रत गीत से किया गया। साध्वी प्रमिलाकुमारी जी ने कहा पहले के जमाने में दादी-नानी के संस्कार बच्चों को मिलते थे, उनकी कहानियां सुनते थे, पर आज तो किसी के पास समय ही नहीं है, दादी-नानी के संस्कार मोबाइल ने ले लिए। वर्तमान युग कम्प्यूटर-मोबाइल का युग है, बच्चे मोबाइल में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि दूसरी चीजों के लिए समय ही नहीं है।

खुशी की बात है कि अणुव्रत के माध्यम से बच्चों को स्कूलों में शिक्षा दी जा रही है, अणुव्रत कोई छोटी चीज नहीं है, सूरज के प्रकाश की तरह सबको मिलती है, अपने जीवन में अणुव्रतों को ग्रहण करने का प्रयास करें। संरक्षक शांतिलाल बैद, संगठन मंत्री नवीन नाहटा, सभा उपाध्यक्ष राजेंद्र खटेड़, प्रिंसिपल नथमल जांगिड़, चेन्नई मिडिया प्रभारी शांति दुधोडिया, महिला मंडल मंत्री राज कोचर आदि ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा आचार्य श्री तुलसी के अवदानों में से एक अणुव्रत ही एक ऐसा अवदान है जिससे जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं। कार्यक्रम में बच्चों का देश मासिक पत्रिका एवं अणुव्रत केलेंडर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाध्यापक, कार्यकर्ता, प्रतिनिधि आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन रेणु कोचर ने किया।

जन्मभूमि में स्वागत समारोह का आयोजन

गंगाशहर।

तेरापंथ भवन गंगाशहर में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी एवं सहवर्ती मुनिवृंद का स्वागत समारोह का आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया। मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से स्वागत कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथी सभा के कमलचन्द भन्साली, पवन छाजेड़ व शांतिलाल सेठिया ने स्वागत गीत का संगान किया। मुनि कमल कुमार जी के सहदीक्षित मुनि श्रेयांश कुमार आदि संतों ने भावपूर्ण गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की। मुनि सुमति कुमार जी ने पधारे तीनों संतों स्वागत करते हुए कहा कि लोगों को उपदेश देकर संवर व निर्जरा से धर्मसंघ की नींव को मुनि कमलकुमार जी लम्बे समय से मजबूत कर रहे हैं। तेरापंथ के गौरवशाली सन्तों में आपकी गिनती होती है। इस अवसर पर मुनि कमल कुमार जी ने आचार्य प्रवर से प्राप्त पत्रों का वाचन किया और साधुओं व साध्वियों को पत्र भेंट किए। मुनि कमल कुमार जी ने पुरानी बातों को स्मृति पटल पर लाकर सभी श्रावक-श्राविका समाज को एकता के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने कहा कि प्रवचन में आने वाले सभी लोग सामायिक अवश्य करें तथा अपने जीवन को अध्यात्म से जोड़ें। जैन विश्व भारती लाडनूं के उपाध्यक्ष विजय सिंह डागा ने मुनिश्री को उग्र विहार कम करके स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने का निवेदन किया। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के वरिष्ठ उपाध्यक्ष बिमल चोपड़ा ने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ न्यास ट्रस्टी व तेरापंथ महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़ ने मुनिश्री को कहा कि आप दीक्षा लेकर अपनी मां के ऋण से मुक्त हो गए परन्तु आपकी मातृभूमि गंगाशहर का ऋण बकाया है। आप अभी भी 18वर्षों बाद यहां पधारें हैं और दीक्षा के 53 वर्ष हो जाने के बावजूद स्वतंत्र रूप से गंगाशहर में चातुर्मास नहीं किया। छाजेड़ ने अपने बाल सखा का भावभीना स्वागत करते हुए कहा कि आपने लम्बे-लम्बे विहार व तपस्या के कीर्तिमान रचे हैं जिसका हमें नाज है। तेरापंथ युवक परिषद उपाध्यक्ष देवेन्द्र डागा, तेरापंथी सभा उपाध्यक्ष पवन छाजेड़, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष संजू लालानी, मुनिश्री के परिवार की ओर से चारु मुशरफ ने अपनी भावनाओं के माध्यम से मुनिश्री का स्वागत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन देवेन्द्र डागा ने किया।

संबोधि

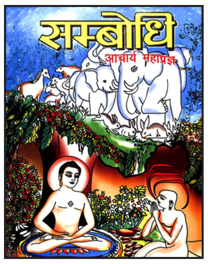

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

भगवान् प्राह

३४. पर्यायापेक्षया धीमन् आत्माप्येषु न शाश्वतः।
पुद्गलापेक्षया नूनं, शरीरञ्चापि शाश्वतम्।।

भगवान् ने कहा–धीमन्! पर्याय की अपेक्षा से आत्मा भी शाश्वत नहीं है और पुद्गल की अपेक्षा से शरीर भी शाश्वत है।

इस जगत में जितने भी द्रव्य हैं, वे शाश्वत और अशाश्वत दोनों हैं, द्रव्यत्व की अपेक्षा से शाश्वत है और पर्याय की अपेक्षा से अशाश्वत है। गुण और पर्याय इन दोनों का समन्वित रूप द्रव्य है। द्रव्य अपने मौलिक गुण को किसी भी अवस्था में नहीं छोड़ता। वह सतत उसके साथ रहता है। आत्मा का स्वभाव-गुण चैतन्य है, वह चैतन्य एकेन्द्रिय वाली आत्माओं में भी विद्यमान है, पंचेन्द्रिय जीवों में विद्यमान है और अतीन्द्रिय सिद्ध अवस्था में भी विद्यमान है। गीता में कहा है-वस्त्रों के जीर्ण होने पर नये वस्त्रों को जैसे धारण किया जाता है वैसे ही आत्मा पुराने शरीरों को त्याग कर नये शरीरों का धारण करता है, किन्तु आत्मा वैसा का वैसा ही रहता है। यह शरीरों का धारण करना पर्याय है। जैसे शरीर धारण आत्मा की पर्याय है वैसे पुद्गलात्मक है। पुद्गलों का अपना गुण है-वे अवस्थाएं बदलने के साथ गुण को नहीं बदलते। एक ही जीवन में एक ही शरीर कितनी पर्याय बदल लेता है। सूक्ष्मदृष्टि से देखा जाए तो परिवर्तन का क्रम अनवरत चलता है। बौद्ध इसी पर्यायदृष्टि को प्रधान रखकर कहते हैं-सब कुछ क्षणक्षयी है। जो पदार्थ इस क्षण है वह दूसरे क्षण में नहीं है। नदी का पानी जो बह रहा है, दूसरे क्षण वह नहीं है। भगवान् महावीर ने कहा-पर्यायों का परिवर्तन प्रतिक्षण सब द्रव्यों में होता है।

आत्मा गुण की दृष्टि से शाश्वत है और पर्याय की अपेक्षा से अशाश्वत है। वैसे शरीर भी पुद्गल द्रव्य की दृष्टि से शाश्वत है और पुद्गल के पर्याय परिवर्तन की अपेक्षा से अशाश्वत है।

मेघः प्राह

३५. आत्मास्तित्वमुपेतोऽपि, कथं दृश्यो न चक्षुषा?

मेघ बोला–भगवन्! आत्मा का अस्तित्व है फिर भी वह चक्षु के द्वारा दृश्य क्यों नहीं है?

भगवान् प्राह

जीवपुद्गलयोगेन, दृश्यं जगदिदं भवेत् ॥

भगवान् ने कहा–वत्स! यह जगत् जीव और पुद्गल के संयोग से दृश्य बनता है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

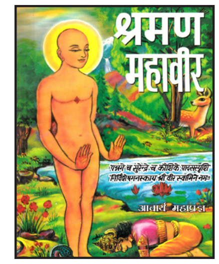

कैवल्य-लाभ

प्राची की अपूर्व अरुणिमा। बाल-सूर्य का रक्तिम बिम्ब। सघन तिमिर क्षण भर में विलीन हो गया, जैसे उत्तका अस्तित्व कभी था ही नहीं। कितना शक्तिशाली अस्तित्व था उसका जिसने सब अस्तित्वों पर आवरण डाल रखा था।

भगवान् महावीर आज अपूर्व आभा का अनुभव कर रहे हैं। उन्हें सूर्योदय का आभास हो रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अस्तित्व पर पड़ा हुआ परदा अब फटने को तैयार है।

भगवान गोदेहिका आसन में बैठे हैं। दो दिन का उपवास है। सूर्य का आतप ले रहे हैं। शुक्लध्यान की अंतरिका में वर्तमान हैं। ध्यान की श्रेणी का आरोहण करते-करते अनावरण हो गए। कैवल्य का सूर्य सदा के लिए उदित हो गया।

कितना पुण्य था वह क्षेत्र-जंभिग्राम का बाहरी भाग। ऋजुबालिका नदी का उत्तरी तट। जीर्ण चैत्य का ईशानकोण। श्यामाक गृहपति का खेत। वहां शालवृक्ष के नीचे कैवल्य का सूर्योदय हुआ।

कितना पुण्य या वह काल वैशाख शुक्ला दशमी का दिन। चौथा प्रहर। विजय मुहूर्त। चंद्रमा के साथ उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का योग। इन्हीं क्षणों में हुआ कैवल्य का सूर्योदय।

भगवान अब केवली हो गए सर्वज्ञ और सर्वदर्शी। उनमें सब द्रव्यों और सब पर्यायों को जानने की क्षमता उत्पन्न हो गई। उनकी अनावृत चेतना में सूक्ष्म, व्यवहित और दूरस्थ पदार्थ अपने आप प्रतिबिंबित होने लगे। न कोई जिज्ञासा और न कोई जानने का प्रयत्न। सब कुछ सहज और सब कुछ आत्मस्थ। शांत सिन्धु की भांति निस्पंद और निश्चेष्ट। विघ्नों का ज्वार-भाटा विलीन हो गया। न तूफान, न ऊर्मियां और न तुमुल कोलाहल। शांत, शांत और प्रशांत।

कैवल्य-प्राप्ति के पश्चात् भगवान् मुहूर्त भर वहां ठहरे, फिर लक्ष्य की ओर गतिमान हो गए।

तीर्थ और तीर्थंकर

भगवान् महावीर वैशाख शुक्ला एकादशी को मध्यम पावा पहुंचे। महासेन उद्यान में ठहरे। अन्तर में अकेले और बाहर भी अकेले। न कोई शिष्य और न कोई सहायक। इतने दिनों तक भगवान् साधना में व्यस्त थे। वह निष्पन्न हो गई। अब उनके पास समय ही समय है। उनके मन में प्राणियों के कल्याण की सहज प्रेरणा स्फूर्त हो रही है। मध्यम पावा में सोमिल नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसने एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया। उसे संपन्न करने के लिए ग्यारह यज्ञविद् विद्वान् आए। इन्द्रभूति, अग्निभूति और वायुभूति ये तीनों सगे भाई थे। इनका गोत्र था गौतम। ये मगध के गोबर गांव में रहते थे। इनके पांच-पांच सौ शिष्य थे।

दो विद्वान् कोलाग सन्निवेश से आये। एक का नाम था व्यक्त और दूसरे का सुधर्मा। व्यक्त का गोत्र था भारद्वाज और सुधर्मा का गोत्र वा अग्नि वैश्यायन। इनके भी पांच-पांच सौ शिष्य थे।

दो विद्वान् मौर्य सन्निवेश से आए। एक का नाम था मंडित और दूसरे का मौर्यपुत्र। मंडित का गोत्र था वाशिष्ठ और मौर्यपुत्र का गोत्र था काश्यप। इनके साढ़े तीन सौ, साढ़े तीन सौ शिष्य थे।

अकंपित मिथिला से, अचलभ्राता कौशल से, मेतार्य तुंगिक से और प्रभास राजगृह से आए। इनमें पहले का गोत्र गौतम, दूसरे का हारित और शेष दोनों का कौडिन्य था। इनके तीन-तीन सौ शिष्य थे।

ये ग्यारह विद्वान् और इनके ४४०० शिष्य सोमिल की यज्ञवाटिका में उपस्थित थे।

भगवान महावीर ने देखा, अब जनता को अहिंसा की दिशा में प्रेरित करना है। जो उसका महाव्रती बनना चाहे, उसके लिए महाव्रती और जो अणुव्रती बनना चाहे उसके लिए अणुव्रती बनने का पथ प्रशस्त करना है। बलि, दासता आदि सामाजिक हिंसा का उन्मूलन करना है। इस कार्य के लिए मुझे कुछ सहयोगी व्यक्ति चाहिए। वे व्यक्ति यदि ब्राह्मण वर्ग के हों तो और अधिक उपयुक्त होगा।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भारमल जी युग

साध्वीश्री चन्नणांजी (बड़ी खाटू) दीक्षा क्रमांक 64

साध्वीश्री प्रकृति से सौम्य, भाग्यशालिनी, बुद्धिमती, साहसवती और विनयवती थी। आपने हजारों गाथाएं कण्ठस्थ की। आपने उपवास, बेले, तेले आदि अनेक बार किये। पंचोला तथा अठाई की तपस्या भी की। तप के साथ क्षमादिक का विशेष अभ्यास करने से आपकी तपस्या अधिक देदीप्यमान हुई।

– साभारः शासन समुद्र –

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

भावा: स्वरूपं जीवस्य (सान्निपातिक भाव)

मोहकर्म को औदयिक प्रकृतियों– कोध, अभिमान, ईर्ष्या, द्वेष आदि को निषेधात्मक भाव तथा उसकी क्षायोपशमिक प्रकृतियों-क्षमा, विनम्रता, प्रमोद-भाव, अद्वेष आदि को विधायक भाव कहा जा सकता है।

उदय और क्षयोपशम भाव का संघर्ष चलता रहता है। उदय भाव का प्राबल्य होने पर क्षयोपशम शक्तिहीन हो जाता है और क्षयोपशम सबल होने पर उदय भाव पराभूत हो जाता है। क्षयोपशम भाव को पुष्ट करना और उदय-भाव को कृश करना-यही है अध्यात्म-साधना।

इन पांच भावों में अतिरिक्त एक भाव और आगम-साहित्य में उपलब्ध होता है, वह है सान्निपातिक भाव। यह स्वतन्त्र भाव नहीं है। यह अनेक भावों के मिश्रण से निष्पन्न होता है। इसके द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी, चतु: संयोगी और पंचसंयोगी इस प्रकार अनेक वर्गीकरण उपलब्ध होते हैं।

जैसे- द्विसंयोगी– १. औदयिक, औपशमिक (मनुष्य और उपशांत मोह)
२. औदयिक, क्षायिक (मनुष्य और क्षीण कषाय) आदि-आदि।

त्रिसंयोगी– १. औदयिक, औपशमिक, क्षायिक (मनुष्य, उपशांत-मोह, क्षायिक, सम्यग दृष्टि)।
२. औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक (मनुष्य, उपशांत मोह और मतिश्रुतज्ञानी) आदि-आदि।

चतु: संयोगी– औदयिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक (मनुष्य, क्षायिक सम्यग्दृष्टि, पंचेन्द्रिय और जीव) आदि-आदि।

पंचसंयोगी– औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक (मनुष्य, उपशांतमोह, क्षायिक सम्यग्दृष्टि, पचेन्द्रिय और जीव)। क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव उपशम श्रेणी लेता है तब ग्यारहवें गुणस्थान में यह स्थिति बनती है।

विभिन्न विवक्षाओं से सान्निपातिक भाव के अनेक भेद बतलाए गए हैं।

नियति और पुरुषार्थ का समन्वय

सत्य के शोध में अनाग्रह और सत्य की साधना में आग्रह होना चाहिए। यथार्थ के आकाश में उड़ान भरने के लिए अनाग्रह और आग्रह इन दोनों पंखों की आवश्यकता रहती है। जिस व्यक्ति ने केवल अन्ध आग्रह करना ही सीखा है, उसने सत्य के प्रवेशद्वार को बन्द कर दिया। जिसने केवल अनाग्रह को ही सीखा है, उसमें दृढ़ता शून्यता रहती है। जिसने दोनों को सीखा है और दोनों का समुचित स्थान पर सम्यक् प्रयोग करता है, वह वस्तुस्थिति से अभिज्ञ बन सकता है। यह अनेकान्त का प्रयोग है।

नियति और पुरुषार्थ, ये दोनों वाद हमारे जीवन के साथ जुड़े हुए हैं। अनेकांत के आलोक में इन्हें समझा जा सकता है। जैन दर्शन आत्मकर्तृत्व में विश्वास करता है। व्यक्ति के सुख-दुःख में कर्मवाद अथवा आत्मकर्तृत्व का सिद्धान्त लागू होता है। किन्तु कुछ स्थितियों में पुरुषार्थ व आत्मकृतित्व निष्प्रभावी रहता है।

जीव के भव्य और अभव्य होने में किसी कर्म का उदय अथवा विलय कारणभूत नहीं है। यह अनादिपारिणामिक भाव है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता। कोई भी पुरुषार्थ अभव्य को भव्य नहीं बना सकता। एक पदार्थ जीव है और एक पदार्थ अजीव है। जीव के जीव होने में और अजीव के अजीव होने में किसी कर्म का योगदान नहीं है, यह भी अनादिपारिणामिक भाव है, स्वाभाविक स्थिति है। यह कुछ भी कृत नहीं है, अकृत है। भव्य को अभव्य और अभव्य को भव्य, जीव को अजीव तथा अजीव को जीव बनाना पुरुषार्थ के वश की बात नहीं है। यहां पुरुषार्थ सार्थक नहीं हो सकता। यह पुरुषार्थ की सीमा से बाहर का क्षेत्र है, अपितु यह पुरुषार्थ-निरपेक्ष विशुद्ध नियति का क्षेत्र है। कोई भव्य है, यह उसकी नियति है। कोई अभव्य है, यह उसकी नियति है। यह पुरुषार्थ-अप्रभावी नियति है।

(क्रमश:)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

फरवरी 2025
सप्ताह के विशेष दिन

10 फरवरी	12 फरवरी
भगवान धर्मनाथ दीक्षा कल्याणक	पक्खी

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री मघराजजी युग

मुनिश्री भानजी (बीकानेर) दीक्षा क्रमांक 287

मुनिश्री बड़े तपस्वी संत थे। आपकी सं. 1941 से 1946 तक की तपस्या का विवरण इस प्रकार है– उपवास/387, 2/110, 3/36, 4/31, 5/12, 6/2, 8/1, 10/2, 15/2। एक पुरातत्व पत्र में बताया है कि वे वर्ष में तीन बार मासखामण करते थे। कई वर्षों तक उनका यह क्रम चलता रहा।

– साभार: शासन समुद्र –

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा-2024 आयोजित

जलगाँव

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में आयोजित ज्ञानशाला की मौखिक परीक्षा जलगांव स्थित अणुव्रत भवन परिसर में सम्पन्न हुई। शिशु संस्कार बोध भाग-1 से भाग-5 तक के कुल 48 बालक-बालिकाओं ने बड़े उत्साह के साथ परीक्षा में भाग लिया। सभाध्यक्ष पवन सामसुखा, तेयुप अध्यक्ष पंकज सुराणा, ज्ञानशाला शेष महाराष्ट्र सह संयोजिका विनीता समदरिया, ज्ञानशाला संयोजक नोरतमल चौरडिया के समक्ष प्रश्न पत्र खोले गए। बच्चों की परीक्षा लेने के लिए महिला मण्डल अध्यक्षा निर्मला छाजेड़, मुख्य प्रशिक्षिका रितु छाजेड, सहसंयोजिका मोनिका छाजेड एवं रोनक चोरडिया के साथ प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही। व्यवस्थाओं में विमलादेवी नेमचंद छाजेड़ परिवार का सहयोग प्राप्त हुआ।

सिकंदराबाद

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा, ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के निर्देशन में एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा सिकंदराबाद के तत्वावधान में ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा 2024 का पूर्ण नैतिकता के साथ सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। इस वार्षिक परीक्षा में हैदराबाद में कुल 8 परीक्षा केन्द्र स्थापित किए गए। डी. वी. कॉलोनी तेरापंथ भवन, हिमायत नगर सभा भवन, बोलाराम केंद्र, हाई टेक सिटी केंद्र, मारेडपल्ली काडीगुडा परीक्षा केन्द्रों में सभा, महिला मंडल एवं ज्ञानशाला के प्रतिनिधियों की साक्षी में परीक्षकों द्वारा प्रश्नपत्र खोले गए। तेलंगाना क्षेत्र से वार्षिक मौखिक परीक्षाओं में 260 ज्ञानार्थियों ने सहभागिता दर्ज कराई। परीक्षा लेने और व्यवस्था में 95 प्रशिक्षिकाओं का सहयोग रहा। परीक्षा केंद्रों में तेमम सदस्यों और किशोर मंडल व कन्या मंडल की टीम ने व्यवस्था बनाए रखने में सुंदर सहयोग दिया।

टिटिलागढ़

स्थानीय तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों की परीक्षा सफलतापूर्वक आयोजित की गई। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात स्थानीय सभा अध्यक्ष गौतम जैन द्वारा प्रश्न पत्र खोले गए। भाग 1 से 5 तक के बच्चों की प्रशिक्षिका बहनों द्वारा अलग-अलग परीक्षा ली गई। ज्ञानार्थी परीक्षा में 23 बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर 11 प्रशिक्षिका बहनें उपस्थित थी।

तोशाम

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा एवं ज्ञानशाला विभाग तोशाम द्वारा तेरापंथ भवन में शिशु संस्कार बोध भाग 1 से 5 की वार्षिक परीक्षा का आयोजन किया गया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष पवन जैन, परीक्षा व्यवस्थापक नीरज जैन, मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन ने केंद्र निर्देशानुसार प्रश्न पत्र के बंद लिफाफे को खोला। कुल 12 बच्चों ने परीक्षा दी।

गंगाशहर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गंगाशहर के संचालन में स्थानीय तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षा से पूर्व मुनि श्रेयांश कुमार जी एवं मुनि सुमति कुमार जी ने ज्ञानार्थियों को प्रेरणात्मक उद्बोधन प्रदान कर मंगल पाठ सुनाया। मुनिश्री के सान्निध्य में प्रकोष्ठ द्वारा प्राप्त प्रश्न पत्रों को खोला गया। इस अवसर पर ज्ञानशाला थली के आंचलिक सह संयोजक रतनलाल छलाणी, परीक्षा व्यवस्थापक देवेंद्र डागा, महिला मंडल अध्यक्ष संजू लालानी, तेयुप अध्यक्ष महावीर फलोदिया, ज्ञानशाला प्रभारी चैतन्य रांका, सह प्रभारी रजनीश गोलछा, संयोजिका सुनीता पुगलिया, मुख्य प्रशिक्षिका प्रेम बोथरा सहित संपूर्ण ज्ञानशाला परिवार उपस्थित रहा। शिशु संस्कार बोध भाग 1 में 40, भाग 2 में 35, भाग 3 में 44, भाग 4 में 17 तथा भाग 5 में 8, कुल 144 ज्ञानार्थियों ने सोत्साह भाग लिया। परीक्षा का संचालन बहुत ही सुंदर तथा सुव्यवस्थित रहा। परीक्षा के व्यवस्थित संचालन में देवेंद्र डागा, चैतन्य रांका, रजनीश गोलछा, ऋषभ लालानी, शोभित सेठिया, दृष्टि चोपड़ा ने अपने श्रम का नियोजन किया। तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्ताओं का योगदान रहा।

भिवानी

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा एवं ज्ञानशाला विभाग भिवानी द्वारा तेरापंथ भवन लोहड़ बाजार में शिशु संस्कार बोध भाग 1 से 5 की वार्षिक परीक्षा का आयोजन किया गया। तेरापंथी सभा के मंत्री विकास जैन, परीक्षा व्यवस्थापिका मधु जैन, ज्ञानशाला संयोजक विजय जैन ने केंद्र निर्देशानुसार प्रश्नपत्र के बंद लिफाफे की स्लिप पर हस्ताक्षर कर प्रश्न पत्र प्रशिक्षिकाओं को दिए एवं परीक्षा शुरू करवाई। हरियाणा ज्ञानशाला की सह प्रभारी वनीता जैन, प्रशिक्षिका शिखा जैन, मीनू जैन ने केंद्र समयानुसार बच्चों से शिशु संस्कार बोध भाग 1 और 2 की परीक्षा मौखिक रूप से ली। कुल 16 बच्चों ने बहुत ही उत्साह के साथ परीक्षा दी।

गांधीनगर, बैंगलोर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गांधीनगर, बैंगलोर के तत्वावधान में बेंगलुरु के 18 केंद्रों पर ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत ज्ञानशाला शिशु संस्कार की परीक्षाएं संपन्न हुई। सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद छाजेड़, कोषाध्यक्ष प्रकाश कटारिया, विजयनगर सभा अध्यक्ष मंगलकोचर, राजाजीनगर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, यशवंतपुर सभा अध्यक्ष सुरेश बरडिया, हनुमंतनगर सभा अध्यक्ष गौतम दक, टी. दासरहल्ली सभा अध्यक्ष भगवतीलाल मांडोत, तेरापंथ युवक परिषद मंत्री राकेश चौरडिया, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री ज्योति संचेती एवं 18 उपनगरों में सभा से नियुक्त प्रभारियों एवं अन्य गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति में ज्ञानशाला परीक्षाओं का आयोजन हुआ। ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मंजू गन्ना, बेंगलुरु की क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया का अथक श्रम नियोजित हुआ। बेंगलुरु क्षेत्र के जोन 1 से 144, जोन 2 से 130, जोन 3 से 151, जोन 4 से 137, विजयनगर बेंगलुरु से 94, ऑनलाइन ज्ञानशाला से 8, वान्यमबाड़ी से 3, चेन्नई से 2 कुल से 669 ज्ञानार्थियों ने परीक्षाएं दी। परीक्षाओं हेतु 130 प्रशिक्षिकाओं ने निःस्वार्थ भाव से सेवाएं प्रदान की। परीक्षा के सुचारू संचालन के लिए बेंगलुरु के चारों जोन की संयोजिकाएं एवं सहसंयोजिकाएं और विजयनगर बेंगलुरु की मुख्य संयोजिका आदि का समय-समय पर पूरा सहयोग मिला। इस अवसर पर सेवारत सभी प्रशिक्षक बहनों का सम्मान किया गया। ज्ञानार्थियों को पारितोषिक एवं प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया। परीक्षा नियोजन एवं क्रियान्वन संबंधित कार्यों में आंचलिक संयोजक माणक संचेती एवं आंचलिक सहसंयोजक रजत बैद का पूर्ण श्रम और सहयोग तेरापंथ सभा और ज्ञानशाला को प्राप्त हुआ। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने सभी प्रशिक्षकों, परीक्षार्थियों, व्यवस्था में सहयोगी कार्यकर्ताओं को साधुवाद किया।

उदयपुर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, ज्ञानशाला उदयपुर द्वारा स्थानीय महिला अहिंसा प्रशिक्षण केंद्र में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशानुसार ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन किया गया। प्रश्न पत्र का लिफाफा सभाध्यक्ष कमल नाहटा एवं परीक्षा केंद्र व्यवस्थापिका प्रतिभा इंटोदिया द्वारा खोला गया। इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्षा सीमा बाबेल, तेयुप अध्यक्ष भूपेश खमेसरा, ज्ञानशाला एरिया प्रभारी पुष्पा नांद्रेचा, व्यवस्थापिका, उपासिका, प्रशिक्षिका एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। शिशु संस्कार भाग-1 के 3 ग्रुप में 20, भाग-2 के तीन ग्रुप में 15, भाग-3 के 2 ग्रुप में 15, भाग- 4 के 1 ग्रुप में 10, भाग-5 के 1 ग्रुप में 6, कुल 10 ग्रुप में 22 प्रशिक्षिकाओं के सहयोग से 66 बच्चों की परीक्षा ली गई।

उत्तर हावड़ा

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों की शिशु संस्कार बोध भाग 1 से भाग 5 तक की मौखिक परीक्षा सभा कार्यालय, सोहनदीप में उत्तर हावड़ा सभा द्वारा आयोजित की गई। सर्वप्रथम नवकार महामंत्र का सामूहिक उच्चारण किया गया। तत्पश्चात केन्द्र द्वारा निर्धारित समय पर केन्द्र से आए प्रश्न पत्र को उत्तर हावड़ा सभा मंत्री प्रवीण कुमार सिंघी, निरीक्षिका विनीता पुगलिया एवं ममता बैद, उत्तर हावड़ा ज्ञानशाला संयोजक प्रदीप बैद, मुख्य प्रशिक्षिका मीना भटेरा की उपस्थिति में खोला गया। संयोजक प्रदीप बैद के प्रश्न पत्र प्रशिक्षिकाओं में वितरण करने के पश्चात सभी बच्चों से मौखिक परीक्षा ली गई। उत्तर हावड़ा ज्ञानशाला के कुल 57 बच्चों (भाग-1 के 16 ज्ञानार्थी, भाग-2 के 24 ज्ञानार्थी, भाग-3 के 8 ज्ञानार्थी, भाग 4 के 5 ज्ञानार्थी, भाग-5 के 4 ज्ञानार्थी) ने मौखिक परीक्षा दी। प्रशिक्षिकाओं के श्रम एवं प्रेरणा, अभिभावकों की जागरूकता, बच्चों के उत्साह के कारण अच्छी संख्या में ज्ञानार्थियों ने परीक्षा दी। उत्तर हावड़ा सभा के सहमंत्री डॉ अरिहंत सिंघी, महिला मंडल की अध्यक्षा सुजाता दुगड़ एवं मंत्री रेणु समदरिया एवं अच्छी संख्या में प्रशिक्षिकाएं उपस्थित रही। कार्यालय प्रभारी सुरेश डांगी ने व्यवस्था में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

उत्तरपाड़ा

शिशु संस्कार की परीक्षा का उद्घाटन नमस्कार महामंत्र और मंगल पाठ के स्मरण के साथ किया गया। सभा अध्यक्ष निकेश सेठिया द्वारा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ परीक्षा पत्र को ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मंजू कोठारी और प्रशिक्षिका शांति धारीवाल की उपस्थिति में खोला गया। प्रशिक्षिकाओं द्वारा 10 ज्ञानार्थियों की परीक्षा ली गई। परीक्षा के दौरान ज्ञानशाला परिवार के आंचलिक समिति सदस्य संजय पारख निरीक्षण के लिए उपस्थित हुए।

राजाराजेश्वरी नगर

मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य एवं बेंगलोर ज्ञानशाला के तत्वावधान में संचालित राजाराजेश्वरी नगर ज्ञानशाला द्वारा आयोजित ज्ञानशाला के वर्ष 2024 की परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों का सम्मान एवं पुरस्कार वितरण समारोह तेरापंथ भवन में किया गया। बच्चों द्वारा ज्ञानशाला गीत के संगान से कार्यक्रम का आरम्भ हुआ। तेरापंथी सभा की उपाध्यक्ष सरोज आर बैद ने समागत श्रावक-समाज का स्वागत किया। मुनि मोहजीतकुमार जी ने कहा कि ज्ञानशाला सद्संस्कारों के निर्माण की आधारशिला है। बचपन में संस्कारों के निर्माण के प्रति जागरुकता का प्रकल्प आचार्य श्री तुलसी ने संयोजित किया। वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण इस प्रकल्प के सम्यक् संवर्धन के प्रति प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा, समायोजित यह उपक्रम स्थानीय सभाओं के माध्यम से संचालित होता है। ज्ञानार्थियों को ज्ञान बोध देने के लिए प्रशिक्षित प्रशिक्षिकाएं अपने समय और श्रम का बलिदान देती हुई भावी पीढ़ी का आध्यात्मिक विकास करती हैं। महासभा से कर्नाटक के प्रभारी प्रकाश लोढ़ा ने महासभा द्वारा संचालित ज्ञानशालाओं की जानकारी दी। आंचलिक संयोजक माणकचंद संचेती, क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया, जोन संयोजिका पवन संचेती ने राजाराजेश्वरी नगर ज्ञानशाला को एक व्यवस्थित एवं जागरूक ज्ञानशाला बताया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त बच्चों को पुरस्कृत किया गया। सभी उत्तीर्ण बच्चों को भी सम्मानित किया गया। सभी प्रशिक्षकों का सम्मान किया गया। ज्ञानशाला प्रायोजक परिवार निर्मलकुमार सरोजदेवी विकास राकेश दुगड़ एवं कार्यक्रम के प्रायोजक गुलाबदेवी डॉ. प्रकाश छाजेड़ को सम्मानित किया गया। ज्ञानशाला की रिपोर्ट का वाचन संयोजिका प्रिया छाजेड़ ने किया एवं महासभा द्वारा प्रदत्त उत्तम ज्ञानशाला के पदक को समाज को समर्पित किया।

आध्यात्मिक मिलन कार्यक्रम

सूरतगढ़।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी बसंत प्रभाजी ठाणा 4, साध्वी प्रज्ञावती जी ठाणा 4 व साध्वी सुदर्शनाश्री जी ठाणा 5 के आध्यात्मिक मिलन का कार्यक्रम तेरापंथ भवन सूरतगढ़ में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मण्डल द्वारा मंगलाचरण से हुई। तेरापंथ महिला मण्डल की सदस्याओं द्वारा गीतिका के माध्यम से सभी का स्वागत किया गया। सुरेन्द्र जैन, अध्यक्ष जय भिक्षु प्रतिष्ठान श्रीगंगानगर, विनोद नोलखा पूर्व अध्यक्ष तेरापंथ महिला मण्डल सूरतगढ़, सुशीला नाहटा, मंत्री महिला मण्डल पीलीबंगा, ऋषभ चौराड़िया, महामंत्री आँचलिक समिति श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़ आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। सभी साध्वी वृंद ने गीतिका के माध्यम से अपने भाव रखे।

'शासनश्री' साध्वी बसंतप्रभा जी, साध्वी प्रज्ञावती जी व साध्वी सुदर्शनाश्री जी ने श्रावक समाज को उद्बोधन देते हुए कहा कि धर्म संघ के प्रति सभी की आस्था इसी प्रकार बनी रहे। सभी मिल कर गुरुदेव की यात्रा की तैयारी करें। अधिक से अधिक धर्म ध्यान व वर्षी तप करने का प्रयास करें, ताकि जब गुरुदेव आपके क्षेत्र में अक्षय तृतीया के पारणे करवाए तो आँचल के भी वर्षीतपों की अच्छी संख्या रहे। अंत में सभा अध्यक्ष धनराज नवलखा ने तीनों साध्वी समूह का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि साध्वीश्री जी ने सूरतगढ़ पर कृपा कराते हुए ऐतिहासिक आध्यात्मिक मिलन का कार्यक्रम सूरतगढ़ में करवाया। मंच संचालन साध्वी संकल्पश्रीजी ने किया।

तेरापंथ सभा के मीडिया प्रभारी भरत ऋषि रांका ने बताया की सूरतगढ़ ही नहीं श्रीगंगानगर - हनुमानगढ़ आँचल में भी साध्वियों के तीन-तीन समूह का आध्यात्मिक मिलन पहली बार हुआ है। बड़ी संख्या में सूरतगढ़ जैन समाज के ही नहीं बल्कि आसपास के क्षेत्रों से भी श्रावक-श्राविका इन अद्भुत पलों के साक्षी बने।

कार्यक्रम मे तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मण्डल, युवक परिषद, कन्या मण्डल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सदस्यों ने अपनी सेवाएं दी।

"संरक्षण" बढ़ते कदम विकास की ओर का आयोजन

गांधीनगर बेंगलुरु।

अभातेममं के निर्देशन में, तेरापंथ महिला मंडल गांधीनगर बेंगलुरु के तत्वावधान में समृद्ध राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत 'संरक्षण - बढ़ते कदम विकास की ओर' में कनड़ा लोअर प्रायमरी स्कूल एवं तमिल हायर प्राइमरी सरकारी स्कूल को संरक्षण में लिया गया। इस योजना के तहत 3 शौचालय, एक यूटिलिटी, स्कूल में फ्लोरिंग, सुरक्षा हेतु ग्रिल, पानी की टंकी एवं मोटर, वॉटर प्यूरीफायर, पूरे स्कूल की दीवारों की पेंटिंग आदि का काम करवाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेरणा गीत के संगान से किया गया। अध्यक्ष रिजु डूंगरवाल ने आए हुए सभी का स्वागत किया। उद्घाटनकर्ता एवं मुख्यअतिथि कर्नाटक सरकार के मिनिस्टर ऑफ़ हाउसिंग, वक्फ एंड माइनॉरिटी वेलफेयर जमीर अहमद खान ने अपने वक्तव्य में मंडल द्वारा किए गए कार्यों की सरहाना की और कहा भविष्य में जब भी कोई सामाजिक कार्य होंगे तो वे हमेशा उसके लिए तैयार हैं।

मंत्री ज्योति संचेती द्वारा कन्या सुरक्षा सर्कल बनाने के लिए स्थान की मांग पर उन्होंने उचित स्थान प्रदान करने का आश्वासन दिया। इसी कड़ी में कन्या विकास योजना के तहत 6 बेंच का भी उद्घाटन किया गया। केंद्र द्वारा निर्दिष्ट और तेरापंथ महिला मंडल बेंगलुरु द्वारा संचालित वर्ष भर चलने वाले निःशुल्क कैंसर जागरूकता अभियान की जानकारी एवं उससे संबंधित पोस्टर मंत्री महोदय को भेंट किए गए। साउथ वॉर्ड एजुकेशन ऑफिसर गिरिजा का इस कार्य में पूर्ण सहयोग रहा।

मंडल ने मंत्री जमीर अहमद खान एवं गिरिजा का सम्मान किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व महामंत्री एवं संरक्षण की राष्ट्रीय संयोजिका वीना बैद ने कहा पूरे भारतवर्ष में 50 स्कूलों को संरक्षण में लिया गया है। उन्होंने कहा निर्माण के बाद सभी इस बात का ध्यान दें कि हम इन स्कूलों को आगे संभालने का प्रयास करें। उन्होंने मंडल के कार्य की सराहना की। कर्नाटक सह प्रभारी मधु कटारिया ने भी अपने वक्तव्य में कहा कि पुनर्निर्माण से पहले स्कूल की तस्वीर कुछ और थी वह बहुत जर्जर हालत में थी लेकिन आज स्कूल अच्छे रूप में दिखाई दे रहा है। तेरापंथ महिला मंडल गांधीनगर की संरक्षिका सायर बाई मालू, स्कूल की प्रिंसिपल सरसा, उषा रानी एवं तेरापंथ सभा ट्रस्ट के उपाध्यक्ष पवन चोपड़ा ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति की। मंडल ने मुख्य प्रायोजक शशिकला, सुमन, वनीता नाहर, महावीर पदमाबाई धोखा एवं सहयोगी प्रायोजक परिवार का सम्मान किया गया। इस अवसर पर पदाधिकारी, पूर्व अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी की बहनें उपस्थित थी। तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर की अध्यक्ष मंजू गादिया, हनुमंत नगर से अध्यक्ष सरोज दुगड़, राजाजीनगर से मंत्री लता नौलखा, यशवंतपुर से मंत्री लाडली मूथा, युवक परिषद के अध्यक्ष विमल धारीवाल आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन संयोजिका लता गादिया ने किया व आभार ज्ञापन संयोजिका लक्ष्मी बोहरा ने किया।

प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष पर जप और प्रेक्षाध्यान साधना

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमुर्ति मुनि कमलकुमार जी की प्रेरणा से तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को सामायिक, जप व प्रेक्षाध्यान का उपक्रम 3 घरों में सकुशल सम्पादित हुआ। इस जप का क्रम प्रत्येक रविवार को आयोजित होगा।

सर्वप्रथम युवक परिषद के अध्यक्ष महावीर फलोदिया उपाध्यक्ष ललित राखेचा, देवेंद्र डागा व कार्यकारिणी सदस्य कुलदीप छाजेड़, किशोर मण्डल संयोजक हिमांशु सिंघी व सहसंयोजक मंयक सिंघी ने परमेष्ठी वंदना से शुरूआत कराया। जप के अंत में महिला मण्डल से अध्यक्ष संजु लालाणी, उपमंत्री बिन्दु छाजेड़ कार्यकारिणी सदस्या श्रीया गुलगुलिया एवं कनक गोलछा, कार्यकारिणी सदस्य विजयश्री पारख और मंजु लुणिया द्वारा प्रेक्षाध्यान गीत संगान एवं प्रेक्षाध्यान का प्रयोग कराया गया।

संवाद जैन तेरापंथ न्यूज़ से

अभातेयुप के तत्वावधान में 'रक्तदान महोत्सव 2.0' का आगामी 17 सितंबर 2025 को होगा आयोजन

केंद्रीय रेल मंत्री (भारत सरकार) अश्विन वैष्णव ने 'रक्तदान महोत्सव 2.0' के पोस्टर का अनावरण किया। इस अवसर पर MBDD के राष्ट्रीय प्रभारी हितेश भांडिया, सहप्रभारी सौरभ पटावरी, अभातेयुप से अंकुर लूणिया, एवं आरुष बोथरा उपस्थित थे। प्रतिनिधि मण्डल ने मनसुख माण्डविया - केंद्रीय श्रम एवं रोजगार तथा युवा मामलों एवं खेल मंत्री से भी मुलाकात कर 'रक्तदान महोत्सव 2.0' के बारे में जानकारी दी।

तिविहार संथारा परिसंपन्न

गंगाशहर। गंगाशहर निवासी श्रीमती पानी देवी मालू धर्मपत्नी स्व. भंवरलाल मालू का तिविहार संथारा दिनांक 25-01-2025 को सायं 6:18 बजे परिसंपन्न हो गया। ज्ञातव्य है कि आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी व सुशिष्य मुनि सुमति कुमार जी एवं सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने पारिवारिक जनों की अनुमति से एवं श्रावक समाज की उपस्थिति में दिनांक 24 जनवरी 2025 को दोपहर 2:00 बजे तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया था।

तिविहार संथारा परिसंपन्न

गंगाशहर। गंगाशहर निवासी श्रीमती मगनी देवी बोथरा धर्मपत्नी स्व. श्री गुलाब चन्द बोथरा को पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी चारितार्थप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने पारिवारिक जनों की अनुमति से एवं समाज के श्रावकों की उपस्थिति में दिनांक 26 जनवरी 2025 को दोपहर 4:23 बजे तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया था जो कि सायं 4:41 बजे परिसंपन्न हो गया।

चौविहार संथारा परिसम्पन्न

अररिया कोर्ट (बिहार)। आड़सर निवासी –अररिया कोर्ट (बिहार) प्रवासी संथारा साधिका श्रीमती भंवरीदेवी बरड़िया (93 वर्ष) धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलाल बरड़िया का चौविहार संथारा दिनाँक 26 जनवरी 2025 को रात्रि 11:30 बजे सिद्ध हो गया है। ज्ञातव्य है कि आप 'शासनश्री' साध्वी पानकंवर जी, साध्वी चंपाजी तथा मुनि जयदीप कुमार जी की संसारपक्षीय पारिवारिक सदस्य थीं।

चौविहार संथारा परिसम्पन्न

मदुरै (तमिलनाडु)। मदुरै प्रवासी पड़िहारा निवासी, संथारा साधिका सरला देवी दुगड़ (उम्र 65 वर्ष) धर्म पत्नी स्व.श्री श्रीचंद दुगड़ का चौविहार संथारा दिनांक 28.01.25, मंगलवार, सायं 4.33 बजे संपन्न हो गया। ज्ञातव्य है कि श्रीमती सरला देवी दुगड़ को दिनांक 26.01.25 रविवार को रात्रि 8.30 बजे पारिवारिक जनों ने संथारे का प्रत्याखान कराया था।

'प्रेक्षा प्रवाह : शांति और शक्ति की ओर' कार्यशाला का आयोजन

नोखा। 'शासनगौरव' साध्वी राजीमतीजी के सान्निध्य में प्रेक्षा प्रवाह कार्यशाला आयोजित की गई। साध्वीश्री ने प्रेक्षा प्रवाह के बारे में अपना उद्बोधन प्रदान किया। साध्वी प्रभातप्रभा जी ने कायोत्सर्ग के बारे में समझाते हुए प्रेक्षाध्यान को आचार्य महाप्रज्ञ जी की जैन धर्म को एक बड़ी देन बताया। साध्वी श्री ने कहा कि यदि शरीर, मन और दिमाग एक दिशा में चलते हैं तो सब ठीक है। सभा से इंद्र चन्द बैद, उपासक अनुराग बैद, प्रताप चोरड़िया, सुनिल बैद, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी आदि के साथ श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
03 फरवरी - 09 फरवरी, 2025

संक्षिप्त खबर

अ.भी.रा.शि.को. मंत्र का 11 लाख जाप संपन्न

श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़। आंचल में विराजित 'शासनश्री' साध्वी बसंतप्रभा जी ठाणा-4, साध्वी प्रज्ञावती जी ठाणा-4 एवं साध्वी सुदर्शनाश्री जी ठाणा-5, की प्रेरणा से महातपस्वी मुनि अमीचंदजी स्वामी, मुनि भीमजी स्वामी, मुनि रामसुख जी स्वामी, मुनि शिव जी स्वामी, मुनि कोदरमल जी स्वामी नाम के बीज मंत्र 'ॐ. अ. भी. रा. शि. को. नमः' के कुल 11 लाख जाप की ऊष्णता 15 दिन तक जमाव बिंदु जैसी शीतऋतु को अप्रभावी बनाती रही। जप संयोजक अनिल रांका (सूरतगढ़) और सह संयोजक अनुराग बांठिया (हनुमानगढ़-टाउन) ने अथक श्रम नियोजित करते हुए श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़ आँचल में जाप के आयाम को उच्चतर कक्षा में स्थापित करते हुए कृपानिधान संघपति के प्रति अनन्त कृतज्ञता और आभार प्रकट किया।

प्रेक्षा ध्यान शिविर का आयोजन

श्रीडूंगरगढ़। अभातेममं के निर्देशानुसार प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन मुनि देवेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा किया गया। मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र उच्चारण से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेक्षा ध्यान गीत का संगान किया गया। मुनिश्री ने प्रेक्षा ध्यान के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि जहां चित की शुद्धि का लक्ष्य होता है वहां चेतना का ऊर्ध्वारोहण होता है। मुनिश्री कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा एवं दीर्घ श्वास के प्रयोग करवाते हुए इनके लाभ की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री मंजू झाबक ने किया। अध्यक्ष सुनीता डागा ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यशाला में श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

सामाजिक सेवा कार्य

गुवाहाटी। तेरापंथ महिला मंडल, गुवाहाटी द्वारा मकर संक्रांति के अवसर पर स्थानीय बी बरुआ कैंसर इंस्टीट्यूट में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी मरीजों के लिए 10 व्हील चेयर एवं अन्य सामग्री वितरित की गयी। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा का हॉस्पिटल के अधिकारियों द्वारा स्वागत किया गया। इस अवसर पर मंत्री ममता दुगड़ ने अपने भाव व्यक्त करते हुए बताया कि विगत 18 वर्षों से मंडल सेवा के इस कार्य से जुड़ा हुआ है। मानव सेवा करके बहनों को संतुष्टि मिलती है। उन्होंने मरीजों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हुए बिहू की शुभकामनाएं दी। बी बरुआ कैंसर हॉस्पिटल के डायरेक्टर बी. बी. बरठाकुर ने मंडल द्वारा किए गए कार्य की प्रशंसा व सराहना की तथा भविष्य में भी उनके साथ जुड़े रहने की मंगल कामना की।

उत्तर कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद, उत्तर कोलकाता द्वारा कंबल एवं आहार वितरण का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से किया गया। आयोजन में लगभग 85 कंबलों का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में बाबूलाल राहुल बाफना, स्वर्गीय बालचंद बोथरा एवं स्वर्गीय कमला देवी बोथरा के पुत्र सुमित बोथरा का विशेष सहयोग रहा।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

नूतन भवन का हुआ उद्घाटन

वाशी।

तेरापंथ राजभवन वाशी के उद्घाटन समारोह का कार्यक्रम तेरापंथ समाज वाशी के तत्वावधान में भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन वाशी नवी मुंबई द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा अध्यक्ष पंकज चंडालिया ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन वाशी के अध्यक्ष ललित बाफना ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि तेरापंथ समाज वाशी ने एक सपना संजोया जो कई वर्षों बाद साकार होने जा रहा है। भवन का उद्घाटन उपासक सुधांशु चंडालिया ने नमस्कार महामंत्र और मंगल पाठ के उच्चारण से किया। भिक्षु महाश्रमण फाऊंडेशन वाशी के महामंत्री बाबूलाल बाफना ने बताया कि तेरापंथ राज भवन के उद्घाटनकर्ता सुरेशचंद्र चेतनकुमार विकासकुमार बागरेचा परिवार कोठारिया निवासी वाशी नवी मुंबई प्रवासी ने उद्घाटन पट्ट का अनावरण किया गया। देवगढ़ के आच्छा परिवार से बसंतीलाल प्रकाश निर्मल महावीर आच्छा परिवार ने शिलान्यासकर्ता के पट्ट का अनावरण किया। तेरापंथी सभा मुंबई अध्यक्ष मानक धींग, भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन के कोषाध्यक्ष ललित बोहरा, सुशील मेड़तवाल ने अपने विचार व्यक्त किए।

उद्घाटन की पूर्व संध्या में आयोजित धम्म जागरण में गायक वैभव सोनी ने प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में महानगरपालिका के कमिश्नर कैलाश शिंदे (आईएएस) भी उपस्थित रहे। प्लॉट प्राप्त करने में हितेश भंसाली की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पिंकू भल्ला ने उदारता के साथ यह प्लॉट तेरापंथ समाज वाशी को दिया। भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन के पदाधिकारी, उद्घाटनकर्ता, शिलान्यासकर्ता और सभी ट्रस्टीगण के लिए कृतज्ञता के स्वर में पवन परमार ने अपनी अभिव्यक्ति दी। आभार ज्ञापन तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अरविंद खांटेड ने किया। आयोजन में मुंबई एवं मुंबई क्षेत्र के स्थानीय एवं राष्ट्रीय पदाधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

'द बेस्ट रिमेडी टू रिलीज स्ट्रेस' पर सफल कार्यशाला का आयोजन

कांदिवली, मुंबई।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल कांदिवली मुंबई द्वारा 'प्रेक्षा प्रवाह - शांति और शक्ति की ओर' के अंतर्गत 'कायोत्सर्ग - द बेस्ट रेमेडी टू रिलीज स्ट्रेस' पर सफल कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। अध्यक्षा विभा श्रीश्रीमाल ने सभी का स्वागत अभिवादन करते हुए आगामी कार्यों की सूचना प्रदान की। चौबीसी के माध्यम से कर्म निर्जरा का महत्व समझाते हुए ज्यादा से ज्यादा बहनों को महिला मंडल द्वारा गतिमान चौबीसी के ग्रुप से जुड़ने की प्रेरणा दी। प्रेक्षा प्रशिक्षिका मीनाक्षी बैद द्वारा कायोत्सर्ग के आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बारे में समझाया गया। तत्पश्चात लगभग 30 मिनट का संपूर्ण कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया गया। प्रेक्षा मेडिटेशन एप, ऑनलाइनवर्कशॉप, कैंप के बारे में जानकारी दी गई। अभातेमम द्वारा प्रकाशित नारीलोक में भाग्यशाली विजेताओं में कांदिवली से अलका पटावरी का नाम प्रकाशित होने पर उन्हें सम्मानित किया गया। कार्यकारिणी सदस्य प्रीति बोथरा द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

'प्रेक्षा प्रवाह : शक्ति एवं शांति की ओर' कार्यशाला का आयोजन

मदुरै। अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं मदुरै द्वारा प्रेक्षाध्यान के दूसरे चरण कायोत्सर्ग द बेस्ट रेमेडी तो रिलीव स्ट्रेस कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ मंडल की बहनों द्वारा सीमंधर स्वामी स्तुति व प्रेक्षाध्यान गीत से की गई। अध्यक्ष लता कोठारी ने सभी का स्वागत किया।

मुख्य वक्ता दीपिका नाहटा ने कहा कि कायोत्सर्ग शब्द का अर्थ शरीर के ममत्व को त्याग कर पूरी जागरूकता के साथ शरीर को शिथिल करना है। ध्यान हमारी आत्मा के ऊपर के आवरण को हटाने का माध्यम है। कायोत्सर्ग के द्वारा आत्मा को समझने में मदद मिलती है एवं अचेतन मन तक पहुंचा जा सकता है। धन्यवाद ज्ञापन मधु जीरावला ने किया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन मंत्री सुनीता कोठारी ने किया।

त्रिदिवसीय आनंदोत्सव प्रेक्षाध्यान शिविर का शुभारंभ

वैदिक विलेज।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में महाप्रज्ञ फिलॉसोफी फोरम के अंतर्गत त्रिदिवसीय आनन्दोत्सव प्रेक्षाध्यान शिविर का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा- जीव अनादिकाल से संसार में परिभ्रमण कर रहा है, उसका कारण कर्म है, राग-द्वेष है।

हर मनुष्य के भीतर चार मनोवृत्तियां है- पशुता, मानवता, साधुता, दिव्यता। दिव्यता तक पहुंचने के लिए जप, स्वाध्याय, ध्यान, प्रार्थना, भजन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दिव्यता की साधना का एक महत्वपूर्ण तत्व है- ध्यान। ध्यान जागरूकता की साधना है, ज्योति व प्रकाश की साधना है। ध्यान के द्वारा व्यक्ति अपने भीतर सोयी शक्तियों को जागृत कर सकता है। ध्यान से व्यक्ति अपनी वृत्तियों का परिष्कार कर दिव्यात्मा बन सकता है। जो स्वार्थ रत व्यक्ति अपने हित के खातिर दूसरों का अहित करता है वह पशुता की श्रेणी में आता है। जो दूसरों का अहित नहीं करता है वह मानवता की श्रेणी में आता है और जो दूसरों की सेवा करता है, परोपकार का भाव रखता है, वह साधुता की श्रेणी में आता है। जो परमार्थ व तारणहारी होता है वह दिव्यात्मा है।

मुनिश्री ने आगे कहा- ध्यान में एक ध्यान प्रेक्षाध्यान है। प्रेक्षाध्यान एक विशिष्ट साधना पद्धति है। प्रेक्षाध्यान स्वभाव व व्यवहार परिवर्तन की साधना है। प्रेक्षाध्यान की साधना से परम आनंद की अनुभूति की जा सकती है। मुख्य प्रशिक्षक रणजीत दुगड़ ने सुख और आनंद में अंतर स्पष्ट करते हुए प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति के बारे में बताया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका सुधा जैन ने संदेश का वाचन किया। मुनि कुणाल कुमार जी ने प्रेक्षा गीत का संगान करते हुए संचालन किया।

अणुविभा की नई पहल

SOL Institutions के साथ ऑनलाइन मीटिंग में अनुभवों का आदान-प्रदान

ऑनलाइन।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड़ के निर्देशन में जीवन विज्ञान विभाग द्वारा स्कूल प्रबंधन, प्रिंसिपल एवं शिक्षकों के साथ ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया गया।

इस मीटिंग में अणुविभा के उपाध्यक्ष एवं जीवन विज्ञान विभाग के प्रकल्प पर्यवेक्षक कैलाश बोराणा, राष्ट्रीय महामंत्री मनोज सिंघवी, अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष अविनाश नाहर की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस मीटिंग का मुख्य उद्देश्य उन स्कूलों के अनुभव साझा करना था, जहां किसी भी रूप में जीवन विज्ञान संचालित है। चर्चा इस पर केंद्रित रही कि जीवन विज्ञान का छात्रों, स्कूल और अभिभावकों पर क्या सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और इसे और प्रभावी बनाने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं।

जतन देवी डागा सीनियर सेकेंडरी हाई स्कूल, रायपुर के प्रतिनिधि मनीष डागा एवं महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल, भीलवाड़ा की प्रतिनिधि दीपा पेसवानी ने अपने अनुभव साझा किये।

इसी क्रम में एक नई स्कूल मारवाड़ी कमर्शियल हाई स्कूल एंड जूनियर कॉलेज, मुंबई की प्रतिनिधि कुसुम पाठक अपने प्रतिनिधियों के साथ उपस्थित होकर अपने शिक्षण संस्थान में जीवन विज्ञान प्रारम्भ करने की इच्छा जाहिर की।

प्रथम दो स्कूलों के साथ एक-एक घंटे के सत्र आयोजित किए गए। जिनमें विद्यालय के प्रधानाध्यापक और शिक्षक भी सम्मिलित हुए। इस चर्चा में जीवन विज्ञान विभाग ने यह भी बताया कि वे स्कूलों को किस प्रकार सहयोग प्रदान कर सकते हैं, ताकि इस कार्यक्रम को और अधिक प्रभावशाली तरीके से लागू किया जा सके।

राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी, सहसंयोजक कमल बैंगानी और सह संयोजिका डॉ. हंसा संचेती की सक्रिय सहभागिता रही। आयोजन में तीन सत्रों को मिलाकर लगभग 90 महानुभावों की उपस्थिति रही।

विद्यालय प्रबंधन प्रकोष्ठ की संयोजिका प्रियंका नाहटा, सह-संयोजिका पूजा दुगड़ एवं उनकी टीम से दीपिका फुलफगर और अनिता गुलगुलिया का विशेष योगदान रहा।

मुनिवृंद के प्रवेश पर स्वागत समारोह

राजराजेश्वरी नगर, बेंगलुरु।

मुनि मोहजीत कुमार जी ठाणा-3 का श्रावक-समाज की सुव्यवस्थित रैली के स्थानीय तेरापंथ भवन में पदार्पण हुआ।

यहाँ स्वास्थ्य लाभ हेतु विराजित साध्वी संपूर्णयशा जी ठाणा-3 ने भी मुनि वृंद के दर्शन किए एवं परस्पर सुखसाता की पृच्छा की।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने मुनिवर का प्रसन्नमना स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हम कल ही गुरुदेव की 4 दिवसीय रास्ते की सेवा का लाभ उठाकर लौटे हैं एवं आज यहां मुनिवृन्द का पदार्पण हुआ है। उन्होंने पूरे श्रावक समाज से मुनिवृन्द के प्रवास का अधिकाधिक आध्यात्मिक लाभ उठाने का निवेदन किया। मुनि मोहजीत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में राजाराजेश्वरी नगर के श्रावक समाज से आह्वान किया कि परिवार का हर सदस्य एक अच्छा श्रावक बने। युवापीढ़ी बड़े-बुजुर्गों की यथोचित सेवा करें एवं बच्चे भी ज्ञानार्जन के साथ संस्कारी बनें। मुनि भव्यकुमार जी ने कहा कि स्वयं के साथ साथ अपने परिवारों को भी धर्मसंघ की गतिविधियों से जोड़ना है।

स्वागत के क्रम में तेयुप अध्यक्ष बिकाश छाजेड़, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन पटावरी एवं विजयनगर सभाध्यक्ष मंगल कोचर ने अपने भाव व्यक्त किये। महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री गुलाब बाँठिया ने किया।

पृष्ठ 15 का शेष

कर्मों का खेल...

ज्ञान प्राप्ति में बाधा डालने, ज्ञानी का विरोध करने, ज्ञान की अवहेलना करने के कारण जीव के ज्ञान पर आवरण पड़ सकता है। इसलिए हमें ज्ञान और ज्ञानी का सम्मान करना चाहिए तथा ज्ञान ग्रहण में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करनी चाहिए।

जो व्यक्ति ज्ञान और ज्ञानी का सम्मान करता है, उसके ज्ञानावरणीय कर्म का अच्छा क्षयोपशम हो जाता है तो वह आगे बुद्धिमान हो जाता है। ज्ञानावरणीय कर्म की तरह दर्शनावरणीय, वेदनीय आदि कर्मों का उल्लेख प्राप्त होता है।

वेदनीय कर्म के प्रभाव से स्वास्थ्य में अनुकूलता या प्रतिकूलता उत्पन्न हो सकती है। वेदनीय कर्म के दो प्रकार बताए गए हैं—सात वेदनीय और असात वेदनीय। गजसुकुमाल मुनि के प्रसंग के माध्यम से पूज्य प्रवर ने समझाया कि कर्म किसी को भी नहीं छोड़ता, चाहे वह साधु हो या गृहस्थ।

भगवान महावीर ने भी अपने जीवन में कष्ट सहे, यह कर्म के प्रभाव का ही परिणाम था। शुभ कर्म के उदय से सौंदर्य, यश, सम्मान प्राप्त होता है, जबकि अशुभ कर्म विपरीत प्रभाव डालते हैं।

कर्मों का यही खेल हमारे जीवन की दिशा तय करता है। अतः "जैसी करणी, वैसी भरणी" को सदैव स्मरण रखते हुए बुरे कार्यों से बचें और संयम की साधना करें, जिससे पाप कर्मों से बचाव हो सके।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

शक्ति का स्रोत

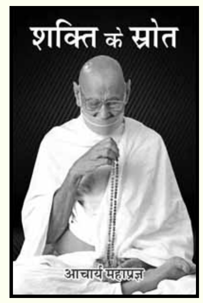

कष्ट-सहिष्णु - कष्ट-सहिष्णुता एक सापेक्ष शब्द है। अज्ञानपूर्वक कष्ट सहन करना एक बात है। ज्ञानपूर्वक कष्ट सहना दूसरी बात है। जानबूझ कर निरर्थक और निष्प्रयोजन अपने शरीर को कष्ट नहीं देना चाहिए। साधना और अभ्यास के द्वारा शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है। कुछ साधकों के जीवन को देखते हैं तो आश्चर्य होता है।

शक्ति का विकास - किसी में बोलने की शक्ति ज्यादा होती है, किंतु सोचने की शक्ति ज्यादा नहीं होती। किसी में सोचने की शक्ति है तो बोलने की शक्ति नहीं है। किसी में काम करने की शक्ति है, किंतु न उसमें बोलने की शक्ति है, न सोचने की शक्ति है। अगर आप हजार व्यक्तियों को इकट्ठा करें तो शायद उनके परीक्षण-निरीक्षण के बाद शक्ति के हजार विकल्प आपके सामने आ जाएंगे। हमें मूल बात को पकड़ना है। मूल बात यह है कि शक्ति निर्विकल्प अवस्था में पैदा होती है, निर्विचार अवस्था में उत्पन्न होती है।

शक्ति-संचय के उपाय - ऊर्जा का क्षरण या अपव्यय जीवन में कठिनाई खड़ी करता है। इस पर विचार करना जरूरी है। हम इस दृष्टि से जागरूक रहें कि शक्ति का ज्यादा व्यय या अपव्यय नहीं करूंगा। बोलना जरूरी है, उसके बिना काम नहीं चलता, किंतु बिना मतलब बोलना भी जरूरी है क्या? शरीर को पोषण देने के लिए भोजन जरूरी है, किंतु वसायुक्त भोजन थोड़ी-थोड़ी देर में खाते रहना जरूरी है क्या? सोचना और चिंतन करना सक्रिय आदमी का स्वभाव है, किंतु निरंतर सोच में डूबे रहना जरूरी है क्या? कुछ देर के लिए दिमाग को भी तो विश्राम कर लेने दो।

मंत्र बल - एक बल और है, जो हमारे जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। चौथी शक्ति है मंत्र बल। मंत्र के द्वारा हम अपनी सारी समस्याओं को सुलझा सकते हैं। बीमारी में भी मंत्र का उपयोग हो सकता है। मानसिक बीमारी में भी मंत्र का उपयोग हो सकता है। भावात्मक बीमारी में भी मंत्र का उपयोग हो सकता है। जो भौतिक समस्याएं हैं उनके लिए भी मंत्र का उपयोग हो सकता है। हम इन चार मंगलों से अपने जीवन को मंगलमय बनाएं, अपने जीवन को भावित करें, यही वास्तविक और सच्चा धर्म है और यही हमारे जीवन का ऊर्ध्वारोहण कर सकता है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

देह से विदेह की यात्रा है कायोत्सर्ग

वैदिक विलेज, शिकारपुर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउन्डेशन के तत्वावधान में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार व दक्षिण कलकत्ता तेरापंथ महिला मंडल के आयोजन में वैदिक विलेज में कायोत्सर्ग कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा- वर्तमान का युग तनाव, विलासिता, अन्धानुकरण का युग है। तनाव के कारण नाना प्रकार के रोगों का सामना करना पड़ रहा है। तनाव से मुक्ति पाने का अमोघ साधन है- कायोत्सर्ग। कायोत्सर्ग देह से विदेह की यात्रा है। बहिर्यात्रा से अन्तर्यात्रा के लिए प्रस्थान करने का उपक्रम है। निर्विचारता, निर्विकल्पता, निर्विकारता के शिखरों पर पहुंचने की प्रक्रिया कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग भेद विज्ञान की साधना है। आत्मा पर जमे मलिनता के आवरण को दूर करने का दुर्लभ साधन कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग का अर्थ तनाव विसर्जन व ममत्व का विसर्जन है। इस अवसर पर प्रेक्षा प्रशिक्षिका मीना साभद्रा ने कायोत्सर्ग का वैज्ञानिक आधार बताया। स्वागत भाषण साउथ कोलकाता महिला मंडल अध्यक्षा पदमा कोचर ने दिया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका मंजु सिपाणी ने प्रेक्षाध्यान की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन महिला मंडल मंत्री अनुपमा नाहटा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
03 फरवरी - 09 फरवरी, 2025

चित्त को मैत्रीभाव से भावित करना है कल्याणकारी : आचार्यश्री महाश्रमण

चिरई नानी।
22 जनवरी, 2025

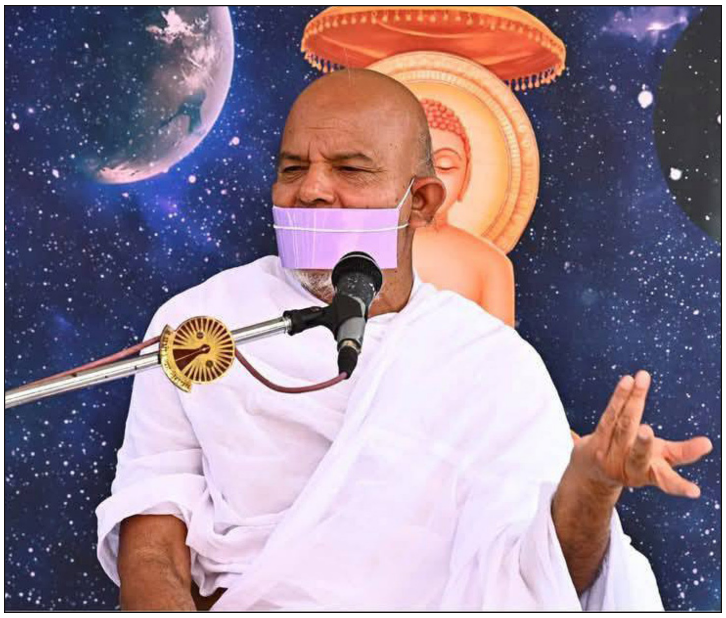

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ चिरई नानी स्थित शक्ति विद्यालय पधारे। अध्यात्म शक्ति के प्रदाता ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फ़रमाया कि संस्कृत में चार भावनाओं वाला एक श्लोक है, जिसमें प्रार्थना की गई है—हे देव! मेरी आत्मा समस्त प्राणियों के प्रति मैत्री रखे, गुणीजनों के प्रति प्रमोद भाव रहे, जो कष्ट में हैं उनके प्रति करुणा जागृत हो, और विपरीत विचारधारा रखने वालों के प्रति मध्यस्थ भाव बना रहे।

ये चार भावनाएँ न केवल अध्यात्म से जुड़ी हैं, बल्कि व्यवहारिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यदि सभी प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव बना रहे और किसी के प्रति वैर न रखा जाए, तो यह एक बहुत ऊँचा विचार है। मैत्री और अहिंसा परस्पर संबंधित हैं, क्योंकि मैत्री का मूल भाव ही अहिंसा है।

सभी जीव सुखी और निरोगी रहें, सबका कल्याण हो, कोई भी दुःखी न हो—यह मंगल भावना होनी चाहिए। कम से कम मन में हिंसा का भाव तो उत्पन्न न हो। हिंसा किसी भी रूप में—कृत (स्वयं करना), कारित (दूसरों से कराना), अनुमति (स्वीकृति देना), मन, वचन और काया से न हो। जितना संभव हो, दूसरों का आध्यात्मिक हित करने का प्रयास करें, भले ही वे तिर्यंच ही क्यों न हों। कुछ तिर्यंच भी श्रावक हो सकते हैं, उनमें भी ज्ञान की कुछ मात्रा हो सकती है। देव जगत को भी धार्मिक मार्ग पर प्रेरित किया जा सकता है। गृहस्थों का भी लौकिक और आध्यात्मिक सहयोग महत्वपूर्ण हो सकता है।

मैत्री का संबंध केवल इस जन्म तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह आगे के जन्मों में भी जारी रह सकता है। इसी प्रकार, वैर का संबंध भी आगे तक जा सकता है। इसलिए हमें आध्यात्मिक मैत्री की भावना रखनी चाहिए और गृहस्थों को साधु या श्रावक बनने की प्रेरणा देनी चाहिए, क्योंकि यह भी एक प्रकार की मैत्री ही है। धर्म का संदेश यही है कि सभी प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव रखा जाए और किसी को शत्रु मानकर द्वेष न किया जाए।

मनुष्य को अपने ही कर्म सुख-दुःख देते हैं। अन्य लोग भले ही निमित्त बन जाएँ, परंतु मूल कारण तो आत्मा के अपने ही कर्म होते हैं। इसलिए किसी के प्रति द्वेष या रोष न रखें। मन में समता और शांति का भाव बनाए रखें। चित्त को मैत्रीभाव से भावित करना कल्याणकारी होता है। पूज्यवर के स्वागत में विद्यालय के ट्रस्टी सुरेशभाई ने अपनी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

त्याग और संयम से जीवन बन सकता है सुखमय : आचार्यश्री महाश्रमण

अजापर।
23 जनवरी, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी अजापर के नवकार इंटरप्राइजेज परिसर में पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि मनुष्य संसार में जीवन व्यतीत करता है, लेकिन प्रश्न यह है कि सुखी जीवन कैसे जिया जाए? जीवन को आनंदमय बनाने के लिए शास्त्रों में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताई गई हैं।

पहली बात यह है कि व्यक्ति को आत्मसंयम के साथ जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए और सुकुमारता का त्याग करना चाहिए। कठोरता से जीवन जीने की मनोवृत्ति विकसित करनी चाहिए। कम संसाधनों में भी जीवनयापन करने की क्षमता होनी चाहिए। आवश्यकता अनुसार भौतिक सुविधाओं का उपयोग किया जा सकता है, लेकिन कठिनाइयों में भी मनोबल बनाए रखना आवश्यक है। गर्मी हो या सर्दी, थोड़ी असुविधा सहन करने का प्रयास करना चाहिए। यदि हम किसी परिस्थिति से डरेंगे या भागेंगे, तो आगे बढ़ना कठिन हो जाएगा। इसलिए डटकर खड़े रहना चाहिए और आत्मसंयम से जीवन जीना चाहिए।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि इच्छाओं का अतिक्रमण किया जाए। अत्यधिक लालसा और इच्छाएँ व्यक्ति को दुखी कर सकती हैं। यदि कामनाओं पर नियंत्रण रखा जाए, तो दुःख भी स्वतः कम हो जाएगा।

तीसरी बात यह है कि द्वेष का त्याग किया जाए। किसी से ईर्ष्या न करें और दूसरों की सफलता को देखकर दुःखी न हों। यदि कोई प्रगति कर रहा है, तो हमें उसका प्रमोद भाव से स्वागत करना चाहिए। दूसरों को सुखी देखकर दुःखी नहीं होना चाहिए और दूसरों को दुःखी देखकर सुखी नहीं होना चाहिए। हमें भी अपने विकास के लिए प्रयास करना चाहिए।

चौथी बात यह है कि राग का त्याग किया जाए। राग छोड़ना आसान नहीं होता, क्योंकि दसवें गुणस्थान तक भी लोभ और राग बना रहता है। द्वेष पहले समाप्त हो सकता है, लेकिन राग का नाश धीरे-धीरे होता है। राग दो प्रकार के हो सकते हैं—सात्विक राग और असात्विक राग। गौतम स्वामी का भगवान महावीर के प्रति सात्विक राग था, जो गुरु-शिष्य संबंध में स्वीकार्य है। यह राग हानिकारक नहीं होता, लेकिन भोग-विलास और सांसारिक आकर्षण से जुड़ा असात्विक राग त्यागने योग्य होता है। परिग्रह और विषयासक्ति से उत्पन्न राग अप्रशस्त होता है और उसे दूर करने का अधिक प्रयास करना चाहिए। शास्त्रों में कहा गया है— राग से बड़ा कोई दुःख नहीं और त्याग से बड़ा कोई सुख नहीं। गृहस्थों को अधिक सुख-सुविधाओं में उलझने के बजाय थोड़ा कष्ट सहने की आदत डालनी चाहिए। जीवन सादगीपूर्ण होना चाहिए। जीवन में त्याग और संयम का महत्व है, और इन्हीं गुणों के माध्यम से सुखी जीवन जिया जा सकता है।

पूज्यवर के स्वागत में गुजरात की पूर्व विधानसभा स्पीकर नीमा बेन ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। पूर्व राज्यमंत्री बासन भाई ने भी अपनी अभिव्यक्ति देते हुए पूज्यवर से आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रवास स्थल नवकार इंटरप्राइजेज से जुड़े हुए पवन कोठारी, जयसिंह बोथरा ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। नन्हें बालक- बालिका निर्जरा और राहुल बोथरा ने अपनी प्रस्तुति दी। मंजु बोथरा व किशोर धारीवाल ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। नवकार इंटरप्राइजेज परिवार की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

समता से होती है हर परिस्थिति अनुकूल : आचार्यश्री महाश्रमण

सामखियाली।
20 जनवरी, 2025

श्रमण संस्कृति के सूत्रधार आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 12 किमी का विहार कर सामखियाली के मणिबेन रमणिकलाल धनजी छाडवा विश्रांतिगृह में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए शांतिदूत ने फ़रमाया कि आदमी के जीवन में अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियाँ आ सकती हैं, उनमें समता रखना एक साधना होती है।

शास्त्र में कहा गया है कि लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निंदा-प्रशंसा, मान-अपमान—ये जो द्वंद्वात्मक स्थितियाँ हैं, उनमें साधु सम रहते हैं। गृहस्थ भी जितना समता भाव रख सके, वह उनकी आत्मा के लिए हितकर हो सकता है। प्रतिकूल स्थिति में भी गुस्सा न करना, यह एक साधना की बात हो सकती है।

आचार्य प्रवर ने आगे फ़रमाया कि वे पुरुष महापुरुष होते हैं जिनमें महानता होती है, वे लघु नहीं बनते हैं। जीवन में समता-शांति बनी रहे। किसी के कहने से आदमी नीचा या खराब नहीं होता, न ही बड़ा या अच्छा बनता है। वह तो जैसा है, वैसा ही रहता है। समता रखने से आत्मा निर्मल बनती है। यदि समस्या आ जाए, तो समाधान खोजा जा सकता है। दुःखी न बनें, यह प्रयास आदमी का रहना चाहिए।

जवाब बोलकर भी दिया जा सकता है, पर उससे बढ़िया है कि अच्छे कार्य करते जाओ। अच्छे कार्यों से दूसरों को जवाब दो। निंदा-विरोध करने वालों के प्रति भी मैत्री-भाव रखो। प्रेम से सामने वाले को समझा दो। सबके प्रति सद्भावना और मैत्री-भावना रखें। सारी दुनिया को अच्छा बनाना मुश्किल है, पर स्वयं तो अच्छे बन सकते हैं।

पूज्यवर के स्वागत में विश्रांतिगृह के ट्रस्टी हेमराज भाई गडा ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कर्मों का खेल तय करता है हमारे जीवन की दिशा : आचार्यश्री महाश्रमण

भचाऊ।
21 जनवरी, 2025

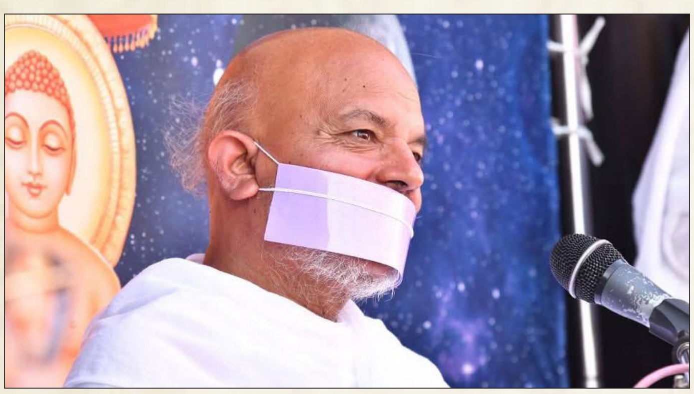

जन-जन को बोधि प्रदान कराने हेतु युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी सामखियाली से लगभग तेरह किलोमीटर का विहार कर भचाऊ के शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान एवं श्रमिक कौशल प्रमाणीकरण केन्द्र में पधारे। आत्मबोध की दिव्य प्रेरणा देते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि जैन दर्शन में कर्मवाद एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। दुनिया में अनेक दर्शन और धर्म हैं, और सबके अपने-अपने सिद्धांत हैं। जैन दर्शन में आत्मवाद का विशेष महत्व है, जहाँ आत्मा को शाश्वत माना गया है। जब तक आत्मा मोक्ष को प्राप्त नहीं कर लेती, वह जन्म-मरण के चक्र में भ्रमण करती रहती है।

आत्मवाद से जुड़ा हुआ ही कर्मवाद का सिद्धांत है। इसी प्रकार लोकवाद भी एक सिद्धांत है। इस प्रकार कई अन्य छोटे-छोटे वाद हो सकते हैं, किंतु यदि संक्षेप में कर्मवाद का सार जानना हो, तो ‘जैसी करणी, वैसी भरणी’ इसका मूल तत्व है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का फल स्वयं भोगना पड़ता है। यदि सद्कर्म किए हैं, तो शुभ फल मिलेगा, और अशुभ कर्म किए हैं, तो कष्ट भोगने पड़ेंगे।

यदि कर्मवाद का विस्तारपूर्वक अध्ययन करें, तो इसके अनेक सूक्ष्म नियम हैं। जैन दर्शन में कर्मवाद का अद्भुत वर्णन मिलता है, जहाँ आठ प्रकार के कर्म बताए गए हैं। ज्ञानावरणीय कर्म ज्ञान को आवृत करने वाला है। ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से अनेक जीवों में ज्ञान का उदय ही नहीं होता है। जिस प्रकार बादल के हटने से सूर्य की तेजस्विता सामने आती है, उसी प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से ज्ञान का प्रकाश दृश्यमान होने लगता है। हर आत्मा में ज्ञान निहित है, किंतु अधिकांशतः वह आवृत्त रहता है। ज्ञान का आवरण किसी का कम तो किसी का ज्यादा होता है। यदि किसी का पूर्ण रूप से आवरण हट जाता है तो मानों ज्ञान का महासूर्य उदय हो जाता है। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि ज्ञान और मनः पर्यव ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान के चार किनारे के समान हैं। ज्ञानावरणीय कर्म का बहुत अच्छा क्षयोपशम हो जाता है और सम्पूर्ण ज्ञान आलोक हो जाता है तो ये चारों ज्ञान एक केवलज्ञान में मानों समाविष्ट हो जाते हैं।

(शेष पेज 13 पर)

सम्पादकीय

डिजिटल उपकरणों की मर्यादा

राजस्थान पत्रिका के अंतिम पृष्ठ के अंतिम कॉलम की अंतिम न्यूज ने सहज ही ध्यान आकृषित किया। लिखा था कि बोहरा समाज के सैयदना साहब की अपील पर बच्चे फोन से दूरी बनाने लगे हैं, अखबार और किताबों को पढ़ने लगे हैं, शारीरिक स्वास्थ्य की गतिविधियों में रुचि लेने लगे हैं।

वर्तमान में सब कुछ ऑनलाइन मिल रहा है। खाद्य सामग्री हो या पाठ्य सामग्री, शरीर से लेकर घर तक को सजाने के सामान हो, डॉक्टर हो या घरों में काम करने वाली आया, किताब हो या अखबार, जिस किसी का नाम लो सब ऑनलाइन मिल जाता है। जहां एक और पूरी दुनिया डिजिटल हो रही है, अपने और अपनों के लिए वक्त खो रही है तो दूसरी ओर विभिन्न धर्म गुरु अपने-अपने अनुयायियों को डिजिटल डिटॉक्स की प्रेरणा भी दे रहे हैं। परम पावन आचार्य श्री महाश्रमण जी भी अपने प्रवचन के माध्यम से भोजन के समय, वाहन चलाते समय, रात के समय मोबाइल आदि डिजिटल उपकरणों के अति आवश्यक उपयोग के अलावा संयम की प्रेरणा दे रहे हैं।

आज हर संस्था अपनी डिजिटल प्रेसेंस चाहती है, होनी भी चाहिए। इससे कम समय में जनता को स्पष्ट, आवश्यक और शीघ्र जानकारी प्राप्त होने की संभावना रहती है। परंतु सामाजिक, राजनीतिक, व्यापारिक, पारिवारिक हर किसी क्षेत्र से जुड़ा व्यक्ति मोबाइल से बहुत अधिक चिपका हुआ है। हम आवश्यक जानकारी के लिए तो डिजिटल मार्ग को चुनें पर हर कार्य के लिए डिजिटल डिवाइसेज पर डिपेंड होना आने वाली पीढ़ी में विसंगतियां भी ला सकता है। विगत कुछ वर्षों से चारित्रात्माएं अपने चातुर्मासिक क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की तपस्याओं के साथ मोबाइल आदि के संयम की तपस्या भी करवा रहे हैं, जो एक कठिन और सराहनीय प्रयास है।

हमारे धर्म संघ की भी हर गतिविधि तकनीक से जुड़ती जा रही है। चाहे सामायिक हो, जाप हो, त्याग हो, धर्मसंघ के समाचार हो या स्वाध्याय हो, सब कुछ ऑनलाइन हो रहे हैं। अनेकानेक व्हाट्सएप ग्रुप्स में एक ही मैसेज का आना और एक ही ग्रुप में अनेकों मैसेज का आना न केवल समय और ऊर्जा की बर्बादी कर रहा है, अपितु आवश्यक और विशेष संदेशों को उनकी ही भीड़ में कहीं छिपा देता है। आवश्यकता है कि हमारे कार्यों की समीक्षा भी हो कि कौनसा कार्य ऑनलाइन होना चाहिए, कौनसा किसी के सान्निध्य या निर्देशन में, कौनसा एकांत या अपनी आत्मा के सान्निध्य में।

आज का व्यक्ति व्यापारिक, सरकारी और अन्य बहुत सारे कार्यों के साथ 'धर्म' भी ऑनलाइन कर रहा है। यदि यह ऑनलाइन धर्म हमें आत्मा से जोड़ने में सहयोगी बनता हो तब तो ठीक है अन्यथा कम से कम धर्म और धार्मिक कार्यों को हम आत्मा की लाइन पर करने का प्रयास करें। डिजिटल डिटॉक्स को न केवल व्यापकता से देखें अपितु उसे अपनाएं भी। इससे आपका और आपके परिवार का मानसिक, वाचिक और शारीरिक सभी व्यवहारों में सुधार हो सकेगा। पारिवारिक सदस्यों में प्रेम, सौहार्द और आत्मीयता बढ़ पाएगी, एक-दूसरे को समझ पाएंगे, पुनः पारिवारिक मूल्यों की महत्ता विकास कर पाएगी। आंखों, दिमाग आदि के रोग भी कम होंगे, और उतना ही खर्च भी कम हो पाएगा। कुल मिलाकर दौड़ भाग वाली इस जिंदगी में कुछ कदम धीमे भी चल लेंगे तो नुकसान नहीं होगा। यह जन्म तो सुधरेगा ही, संयम होगा तो आगे की गति भी सुधरेगी।

श्रावक-श्राविका और साधु-साध्वी सभी डिजिटल डिटॉक्स के प्रति सजग रहें और एक दूसरे को सजग करते रहें। केवल मर्यादा महोत्सव के अवसर पर ही नहीं, हम हमेशा मर्यादाओं गुणगान करते रहें और उन्हें आत्मसात करने का भी प्रयास करें।

161वें मर्यादा महोत्सव हेतु मर्यादा पुरुषोत्तम का भुज में मर्यादामय प्रवेश

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।